

॥ श्रीमत्करुणासागरमहाराजायनमः ॥ श्री
 गुरुभ्योनमः ॥ श्रीसारदायनमः ॥ अथश्रीम
 तकुवेरस्वामीकोग्रंथ ॥ परमसीधांतपुणवक
 लपतरुग्रंथप्रारंभते ॥ अथमंगलाचरणप्रारं
 भः ॥ छेपेयेछंद ॥ केवलपरंमसीधांतक्रांतजीनुस
 दचीदज्ञानंद ॥ सांमथसरजंतसकलअकल
 बीजअंससदीतकंद ॥ १ ॥ खेरकपसरंनकरंनध
 रंतधरसधरसबीवर ॥ समेटपुष्टीसमस्तउद
 येकरंनअस्त ॥ समष्टीभरीतमुष्टपुनीततुष्टीक
 र ॥ २ ॥ रलीतअंसजीनुमलीतभलीतभव ॥ कली
 सकंसकलनहीनांनलीततव ॥ ३ ॥ व्यपीत
 ववीततीतरहीतरमलमत ॥ समलसहीत
 बीनुमसमलीतंनतत ॥ ४ ॥ अमलअचीतउ
 तदूतमीतजीततीत ॥ लगीतसकतजीतकाई
 कीलमीस्तहीत ॥ ५ ॥ अंसनीअलेपतानीजांनी
 तकहीतम्यंम ॥ वहतवीवीधीतातीरहतजंमके
 लंम ॥ ६ ॥ अंसनीअतुलतानीयेसेहीअकतक
 था ॥ ताहीकेपतीकेचीनकोवरनहीतजथा ॥ ७
 अकलकेअकलसकलउतकपीरीधु ॥ हरी
 तसकलअधरीतध्यानमीधु ॥ ८ ॥ अजरकेअ
 जरसचरसीरस्वाधीसद ॥ बुलकेपरंतुअंतअ

॥ परम

॥ २२६

खंडनादीपद ॥ ७ ॥ ज्याहीके प्रकारसबुंमताही
नां प्रक्रमक्रम ॥ अखील आधारजीतु आपनी रा
धारीये ॥ अथाहके अथाह जथाह बरनीतकीत
कुवेरपणीततीनुगतीअनुसारीये १० ॥ इतीश्री
परमसीधांतपणवकलयतरुनांमपथमोनी
शक्रणकरंनप्रथमोकेतु ॥ १ ॥ ॥ गगसारखीः ॥
नांमविलासनीशक्रण ॥ पुतीअक्षरसमुदायवे
दसहीतवीतपंतकहु ॥ गायत्रीसंधाय ॥ १ ॥ जेहीजी
नसेअनुकरमीत ॥ धरहीतप्रसवभवेत ॥ तेहीती
नकेसुनोमरमीत ॥ कहहीतसजंनसहेत ॥ २ ॥
पथंमकहुजेहीनांमकी ॥ जीतुजुगधरवीस्तार ॥
लोकचतुर्दिसवसजीते ॥ मानतसबअधीकार
३ ॥ खटदरसनचौसंपदा ॥ भक्तसहीतसंसार ॥
नांमआराधनसवनके ॥ उरअंतरपतीयार ॥ ४ ॥
अष्टादशखटनवमांही ॥ ओरगंथइतीहास ॥ नी
सेनीजमतसबमीली ॥ कीयेनांमवीसवास ॥ ५ ॥
जदपीरटतसवनांमकु ॥ सुरतनुरतएकतार ॥ ६ ॥
थंमआगुवीनुबस्तही ॥ कीनसुकरोपोकार ॥ ७ ॥
नीतकरताकारनकुलाया ॥ सबजीनकीहंसनां
मरहीतअदबदपदा ॥ नुसेहनांमभरुस ॥ ८ ॥ जेही
अदबदअजमालके ॥ खिलखलकगुनरुपमीली

तत्रं सती दुवर जीत ॥ सब सीरनां म अतुप ॥ न
 तिहीनां मजे हीजे ही जंत ॥ जपत जाप भी न भी न
 यति बी न सदगुरु के ह ॥ परमत त्व न ही ची न ॥
 परमत त्व सो हीनां महे ॥ प्रतीवादी न अभी प्राय
 जुवे जुग भरमा वं न ॥ पकडन पेज उगाय ॥ १० ॥ ए
 ही पेज व सवी श्व ही ॥ लोक सकल जी नु त्याव ॥
 नां मधी ना कष्टु न ही जवी ॥ कावत दाव डडाव ॥ ११ ॥
 या ल्ये धुड सब हो ईर हो ॥ धरीत नां म परतीत ॥ प
 एकरता जे ही नां मके ॥ रही गये सकल अतीत
 १२ ॥ तायन जां न त जुग धर ॥ जीत नां म वी सवा
 स ॥ उपर छला अत वार मे ॥ रहे मोहीत सब दास
 १३ ॥ उपर छल्य सो हीनां महे ॥ नां मी घे हे र गं भी
 र ॥ सो ग्यं म गती गमाय के ॥ वी ल्य मे ह नां म सधी
 र ॥ १४ ॥ या ते जुग ल्य व ता वुह ॥ नां मी नां म सबे ह
 नां म उपल्ये उपचारं न ॥ नां मी परम वदे ह ॥ १५ ॥ उ
 भे नां म अतु भवन की ॥ चवन की रूप अरुप ॥ वी
 वीधी भा ल्य वी स्तरं नु हं ॥ जीत के अरथ अतुप ॥
 १६ ॥ परमत त्व परनां मकी ॥ कही हुती प्रतीवा द
 सो नी ज जुग त ज ता वुह ॥ जे ही गती प्राय अना घ
 १७ ॥ नां म लस्य भये जे हुन से ॥ ओरु जे ही वीधी वि
 स्तार ॥ रती न सकल चर अचर मे ॥ कहु कारण

परम ॥ अमुसारा ॥ १८ ॥ कता अंसनी जअनु भवे जेही
 आगेचीतवंत ॥ धरतनां मयुनी चहीतंन ॥ तंतु
 होके अंतंत ॥ १९ ॥ तंतु अंतंत उभयेतंन ॥ कता अं
 सबीनु सुंन्य ॥ सुंन्य सभावी क संमदंम ॥ रहतस
 दा जेही सुंन्य ॥ २० ॥ सुंन्ये सुंन्य मनातीत ॥ जडहो
 के चेतंन ॥ धरतनां मतां हांकी होकुन ॥ जां हांन
 ही वदीत वचंन ॥ २१ ॥ नां मवां म गुणग्रां मही ॥
 वचनथकी वीगताय ॥ तेही वचंन चहीतंन थकी
 चहीतंन अंसपसाय ॥ २२ ॥ अंस उदीत करता
 रसे ॥ करतानी जके वल ॥ आद्य अंत मध्य जेहं
 नके ॥ एकलमल अमल ॥ २३ ॥ तेही एकलमल
 अमलीसे ॥ वीलसे अंसबुहर ॥ अगणीतघाट
 सचीतकीये ॥ अजभवकीटमुहर ॥ २४ ॥ तेही अं
 सथकी अनुसुत ॥ सकलसाज संमदाय ॥ होत
 ईडी अंत सक्रण ॥ गुणप्रकृती एकताय ॥ २५ ॥
 तेही एकतायते उचरत ॥ अंसपेरीत अतीवांण
 वाही वाणके नीरमीत ॥ सबसीरनां मभेधां
 ण्य ॥ २६ ॥ पणनां मी सब आगंम ॥ पीछेनां मधरं
 त ॥ बीनकागदथां नीकीत ॥ कोहोकेपों अंकपरं
 त ॥ २७ ॥ तबते अगम आलोचंन ॥ कीये बीनाज
 बीकांय ॥ बीनचेतंन चीतवंनकीनु ॥ नां मलगे

कीसगंय ॥ २८ ॥ नीरगुणकेवासीरगुण ॥ अ
 गंमअलखकेअरुप ॥ जेहीतेहीपदथापनवी
 नु ॥ लगेनांनांमनीरुप ॥ २९ ॥ तेहीपदजेहीअ
 देतवीत ॥ अणउआयेबुहेसंडा ॥ जाहांजाहांकंछुनी
 रुपण ॥ तांहांतांहांनांमकीसंडा ॥ ३० ॥ बीनुनी
 रुपंननांमकी ॥ लागलगेकीसठोर ॥ तवसेपी
 छेनांमही ॥ नांमीसबकीमोहोर ॥ ३१ ॥ जबआ
 ग्येकछुथापंन ॥ तवपीछेतीनुनांम ॥ यावीधीस
 कलचराचरा ॥ नांमवीनानहीगंम ॥ ३२ ॥ रोस
 रोमरगरगसगे ॥ तनुकंचीतधरवेष ॥ मंनबु
 धचीतअहंकारलौ ॥ लगेनांमकोलेष ॥ ३३ ॥ ओ
 रुजतमगुणसालीक ॥ सरस्वतीसारदसेस
 यांहांलौनांमनीरंतर ॥ जंतरवतजीतभेश ॥
 ३४ ॥ जलथलथावरजंगम ॥ लखचेरासीजंत
 भागअणनेत्रीसमे ॥ तांहांलौनांमवतंत ॥ ३५ ॥
 ५ ॥ आद्यअंतमध्यउपजके ॥ कीयेतीराकरणतं
 त ॥ तितेभरवीनुनांमके ॥ नहीकोईजुगपरजं
 त ॥ ३६ ॥ दरसअदरसपदारथ ॥ सुलसुसमक
 तवेश ॥ दरस्युनांमसकलसीर ॥ पसीधजेहाल
 हमेश ॥ ३७ ॥ प्रकृतीपुरुषमारुतनम ॥ मांहांत
 तअदरसदेव ॥ एहीतीजअरुपवीनुतीलगे ॥

परम नीरसेयुतांमश्रवेव ॥३८॥ मंत्रजंत्रश्लोकतंत्रयो
 जपगायत्रीश्राय ॥ सहस्रनांमश्रीपत्यलगे ॥ स
॥१०१॥ वनांमनकेस्याध्य ॥३९॥ श्लोकश्रातमपरमातमा
 नीजगतीश्रकलश्ररूप ॥ ब्रह्मजोत्यनीरगुण
 लगे ॥ कीत्येहनांमनीरूप ॥४०॥ श्ररूपकहोतो
 नांमसे ॥ रूपकहोभीनांम ॥ साचतुठपरनांम
 ही ॥ नांमधांमगुणग्राम ॥४१॥ मंदीरमेहेलश्र
 टालका ॥ धरमसाखाश्लोकान ॥ देवलगुहाश्र
 गाश्रियों ॥ सबसीरनांमकीबान ॥४२॥ श्रां
 मकहोतोनांमही ॥ नीगमकहोतोनांमसूगम
 कहोतोनांमसे ॥ नांमदाहनश्लोकानांम ॥४३॥ श्रा
 यकहोतोनांमही ॥ अंतकहोतोनांम ॥ मध्यकहो
 तोनांमसे ॥ नांमकाजश्लोकानांम ॥४४॥ हृद्यक
 होतोनांमही ॥ बेहृद्यभीतोनांम ॥ अनहृद्यकहो
 तोनांमसे ॥ नादश्रायल्योनांम ॥४५॥ श्राधक
 होतोनांमही ॥ उरधकहोभीनांम ॥ समरसक
 होतोनांमसे ॥ उत्तईतजांहीतांहीनांम ॥४६॥
 व्यापकहोतोनांमसे ॥ मापेनांमलखाय ॥ श्रा
 सकहोतोनांमही ॥ परसेनांमपसाय ॥४७॥ जं
 मनेमकहोतोनांमही ॥ संमदंमनांमसरीद ॥
 लसकहोतोनांमसे ॥ पसेनांमपमोधा ॥४८॥ श्र

जर कहै सो हीनांमहे ॥ अमरेनांमनबेस ॥ जडच
 हीतनतेहीनांमही ॥ नांमहीपरमपुरेस ॥ ४९ ॥
 मोक्षकहैतोनांमसे ॥ बंधकहैभीनांम ॥ साक्षी
 कहैसोनांमही ॥ समलीतसरीरसनांम ॥ ५० ॥
 गतीकहैतोनांमसे ॥ अवगत्यनांमकहाय ॥ उं
 चकहैतोनांमथी ॥ नीचेनांमसहाय ॥ ५१ ॥ अव
 एकहैतोनांमही ॥ वरणेनांमवीसेस ॥ करम
 कहैतोनांमसे ॥ धरमेनांमधीसेस ॥ ५२ ॥ अघु
 कहैतोनांमही ॥ दीरघेनांमतचेद ॥ भागत्याग
 दोईनांमसे ॥ नांमहीभेदअभेद ॥ ५३ ॥ त्यागकहै
 तोनांमही ॥ ग्राहजेनांमगनीत ॥ जोगकहैतो
 नांमसे ॥ भोगेनांमभनीत ॥ ५४ ॥ सुखदुखकहै
 तोनांमही ॥ साधारणभीनांम ॥ धरमअरथसे
 हीनांमसे ॥ नांममोक्षओरुकांम ॥ ५५ ॥ सुसम
 कहैतोनांमही ॥ सुलकहैभीनांम ॥ ओरुकार
 णमाहाकारण ॥ परमकारणलौनांम ॥ ५६ ॥ ज
 अतकहैतोनांमसे ॥ सुपत्येनांमससाय ॥ ससे
 पतीतुरीयासने ॥ उनमुनीनांमपसाय ॥ ५७ ॥ स
 ब्कहैतोनांमही ॥ सपरसकहैतोनांम ॥ रूप
 कहैतोनांमसे ॥ रसेगंधेतेहीनांम ॥ ५८ ॥ सरग
 नरगचुहुमुकही ॥ नांमेतेरजनाय ॥ पापपुंन्यसी

॥ परम रनांमही ॥ केतीकुकुहुगनाय ॥ ५५ ॥ रिणपकहे
 तोनांमही ॥ दीनकरकहोसोनांम ॥ तीथीवार
 ॥ १०२ ॥ नक्षेत्रा मासवरसपरनांम ॥ ६५ ॥ सप्तदीपन
 वखंडही ॥ ओरुउदधीसीरनांम ॥ सतजुगत्रे
 हेतादापर ॥ कलीजुगल्यौचौनांम ॥ ६६ ॥ अनंत
 कोटवीसुभयेसमरस्कारमकार ॥ नसजाह
 र्जीतनांमसे ॥ जानतसबसंसार ॥ ६७ ॥ सुन
 कादीकसुरवदेवदत्त ॥ दुअश्रीरवपेहेलादव्य
 सकपीलमुतीनारदा ॥ नांमेगनीतअहलाद
 ६८ ॥ रसवदेवमुतीअजगरा ॥ परमहंसतीनु
 आद्य ॥ नांमथकीजानतजीती ॥ उतपसआद्य
 अनाद्य ॥ ६९ ॥ गीरीसरसतीआरण्यवंतभा
 रथीपरीसीवसीध ॥ तीनुअद्येदशनांमीकी
 नांमथकीपरसीध ॥ ७० ॥ अष्टादशखटचौवे
 दल्यौ ॥ एकवांणीवीस्तारा ॥ नांमथकीभीनभीन
 सबे ॥ दरसतवीवीधीउचार ॥ ७१ ॥ खटदरसेत
 चुहसंपदा ॥ द्वादशपंथवईराग ॥ ओरुबावंनघ
 राजीनु ॥ सबसीरनांमकीवाग ॥ ७२ ॥ मथक
 छवेहेरावांमन ॥ रामकृष्णल्यौईश ॥ नांमथकी
 जुगरटतहो ॥ नीजपतीअंसचौवीस ॥ ७३ ॥ नां
 नभक्तीवैरागही ॥ साधुंनजोगअष्टांग ॥ सीधचे

राखीप्रासन॥सबसीरनांमकेस्वांग॥६४॥सु
 चीसंपतीक्रीयाकरमही॥नवधाभक्तीसमेत
 ओरुप्राचारवीचारही॥सबसीरनांमसखे
 त॥७०॥आवभावओरुजावंत॥उठवेठअवी
 कास॥हलगचलगथीरथंभन॥सबमेनांम
 वीलास॥७१॥एकदोदशसतसेहेस्तर॥खख
 कोटीजेहीलेख॥अरखखरखगततीसुहुनां
 मवीनानहीरेख॥७२॥परापसंतीमध्यमावे
 खरीवांणीवीलास॥जेतेभरउचरेगीरा॥नही
 बीनुनांमसमास॥७३॥बोहोतेरसेहेस्त्रशरी
 रमे॥ओरुसहीतंमनवनाडा॥ईगलापीगला
 आद्यही॥सबसीरनांमकीजाडा॥७४॥कोश
 पंचतेपंडही॥अनोमनोमयेओरुप्रांण॥ज्ञान
 मयेआनेदमये॥सबसीरनांमसेधांण्य॥७५॥पृ
 थ्वीतेजपवंतनभ॥ओरुपंचसुनीरानांमेत
 त्वसरायना॥पुगदहीप्रोढसरीर॥७६॥मणीमां
 णकमुगताफल॥रत्नसहीतवजरैल॥धातस
 सजुगकारीये॥सबसीरनांमरलेल॥७७॥पर
 वतकुलअष्टांगही॥नवकुलनागनरेश॥स
 रसखीतासाहरसुता॥सबसीरनामवरेश॥
 ७८॥चौदहीपयअरवअव॥चारसावनवलाष

परम गनतीतारामंडल ॥ सब सीरनामकी साख ७
 ५ ॥ मधुकी रसाद्ये दोनव ॥ तेत्री सक्रोडही देव
॥१०३॥ चीनमीम नलपंतजीनु ॥ लखीयतनांमसवे
 व ॥ ८५ ॥ गजघोरारथपालरवी ॥ गारावेहेलवा
 हंन ॥ देववैमोनगरुडहंस ॥ सब सीरनांमग्रा
 हंन ॥ ८६ ॥ असंनवसंनहीआभुस्यण ॥ साल
 दोसालालोय ॥ पीतांमरपटुयांमरी ॥ नांमेमा
 गतसोय ॥ ८७ ॥ सेल्यचापक्षत्रीयंतके ॥ खड
 कसहीतहथीयार ॥ कीररवीआद्यलोहोसेहे
 स्तर ॥ नांमेहीदेतलेवार ॥ ८८ ॥ सेसकोरंमनाभी
 नारण ॥ मीडकसप्तयाताल ॥ ओरुडतईतरजत
 जल्यह ॥ सब सीरनांमविसाल ॥ ८९ ॥ चौदतबक
 परसदचीद ॥ आनंदकंदकलेद ॥ नांमआभुस्य
 एतेहीपर ॥ करंनअभेदसभेद ॥ ९० ॥ नांमवस्त
 पदजेहनते ॥ प्रगटभयेहनीजआद्य ॥ परमपुनी
 लगतीग्यंमकुहं ॥ सुनहोसजंतहोईखाध्या ॥ ९१ ॥
 ६ ॥ दोहा ॥ नांमलक्षवीलोकाकी ॥ कीत्येहस्वी
 जरवनीत ॥ अबकुहनांमातीतनकी ॥ किहंकु
 विसुंन्यमीत ॥ ९२ ॥ इतीश्रीनांमनीरुपणबु
 रननप्रथमोकेतुः ॥ १ ॥ एवंहीतीयोभवबीज
 उत्तपनकरनप्रणवकेतु ॥ २ ॥ प्रारंभते ॥ नीज

करताकेवलकुल॥ प्रणवजापवीनुजेह॥ सदची
 द्भानंदपर्यद॥ रहीततत्वजीनुदेह॥ १॥ तत्व
 नांमग्नोरुगुनबीनु॥ जेहीसदबदभजमाल
 दीव्यदेहवयेवीनजीनु॥ तीनुहुकंमकुलरमा
 ल॥ २॥ तेहीस्वालीखुदखेलनकु॥ प्रथंमहीउ
 पजेहआप॥ साहादमोजमजभूतकीये॥ सदची
 द्भानंदथाप॥ ३॥ सदबीजगचीदंअंकुरआ
 नंदभ्रमीतचीकास॥ नीजपतीपुरवेप्रथंमए
 ही॥ भवबीजकीयेहप्रकास॥ ४॥ बोयेहबीज
 तेहजीनुजमी॥ रचहीपंचततखेत॥ नीजकता
 वृत्तीअपरलीतव॥ उदभवप्रणववखेत॥ ५॥ ओ
 रुरजतमगुणसात्वीका॥ एतीनगुनजमीहार्
 जेहीकारणपंचतत्वके॥ पुनीकारजमेफसीर
 ६॥ दशाईडीपथीयोगर॥ अंतसकरणवीकास॥
 खटचकरतरुजडजीनु॥ नीजजमीकीयेहज
 मास॥ ७॥ सुनहोप्रणवतरुसफुरणा॥ धरहीसु
 रतततवेत॥ साख्यापत्रकुशमफल॥ कहजीनु
 सकलसमेत॥ ८॥ साख्यावांनीचतुरजेही॥ प
 त्रतीगंमभ्रनुसार॥ संध्यागायंत्रीफल॥ पुरस्य
 बावंनवीसतार॥ ९॥ एहीतरुप्रणवपरमवीत
 भवकारणनीजभेवा॥ जीनुफलदीजरषपालही

॥ परम ॥ पावतसंतसदेव ॥ १० ॥ धातयां हां ण प्रतमा वी र्वे
 ते ही फल की ये ह प्रवेश ॥ बीनु जीव जग सी र्ना र्
 ॥ १० ॥ या ॥ गनी उर देव देवेश ॥ ११ ॥ जे ही जप से जड देव
 भये ॥ ते ही दी ज घेरं न वाल ॥ आपर हो हु नी ज कं
 कर ॥ ज बी कहो हर छ पाल ॥ १२ ॥ ते ही संध्या गा
 यंतरी ॥ जे ही फल प्रणव व र्वे व ॥ ज पत ज पत जी
 नु जु ग गये ॥ को ड ही ज भये नां देव ॥ १३ ॥ जी ने जी ने
 ए ही फल पाईया ॥ ले ई सत गुरु ग्यं म सार ॥ व्या स
 क पी ल द त शं कर ॥ भये ई श्व र प्र व तार ॥ १४ ॥ बी न
 सत गुरु ही ज जी व र हो ॥ ज पी ज प भये प्र वी न फ
 ल ग ती ग्यं म प ये सी व हं ते ॥ बी नु ग ती ग्यं म र हो
 दी न ॥ १५ ॥ व्या ल मी क सु ती नार द ॥ पारा सुर व सी
 ए ॥ सो द र था पं त गुरु ग्यं मे ॥ सब सी र भये बरे ए
 १६ ॥ ज बी व र न्ये ह हं म सं त ही ॥ फल पावन अधी
 कार ॥ पा ये ह सब जे ही सी व भये ॥ बी नु प ये ही ज
 र र व वार ॥ १७ ॥ प्र ण व वृ क्ष फल वृ न व ही ॥ कहो
 जी नु जे ही अधी कार ॥ सं त स म रु फल भ स न की
 वी प्र वं दे ह र र व वार ॥ १८ ॥ र र व वा ले मे जे ही दी ये
 दां न पुं त्य भ्रं म भोज ॥ कर म कां ड कं न्या वी धी ॥
 ओ रु म ती या क्र म भोज ॥ १९ ॥ अब सार व्या पु
 नी पत्र ही ॥ वृ क्ष पु स्य प ती या र ॥ नां म रु प गु ण स

वकहं। जीनेजेही तत्ववीचार। २०। परापसंतीम
 ध्यमा। वैश्वरीवांणी वीलास। एसाख्यातरुपण
 वकी। नयेजीनुतीगमपकास। २१। नीगमचतुर
 चीतचीतवंन। उचरोहअनंतप्रकार। नामसाम
 रघुजजुरही। अथरवरणअनुसार। २२। श्रुतीस
 मती। ओरुकांडही। नीगंमपत्रअहंमेव। अष्टा
 दशषटनवजीनु। पत्रमेअंकअवेव। २३। चौद
 वीद्यावैदकगीरा। मंत्रजंत्रबुहभीन। ओरकथा
 ईतीहासल्यहं। नीगंमपत्रजीनुचीन। २४। एही
 पत्रवृक्षप्रणवके। नीगमचतुरअधीकार। अब
 गतीगंमकहंकुस्मकी। जिहीवावंतवीस्तार।
 २५। दोहा। साख्यापत्रफलवरणेहावीवीधीभात
 वीगतंग। अबगंमकहंसुणकुसमकी। केहेकु
 विरउमंग। १। ईतीश्रीपरमसीधांतप्रणवकल
 पतरुग्रंथेसाख्यापत्रफलवीभास्यणकरनन
 नामप्रथमंपकरण। संपुर्णः। १। एवंमअंक
 पसारनपुष्टीपुतीपादकरननमहीतियोकेतु
 ॥२॥ प्रारंभ॥ क्रताअंसवृतीप्रणवही। उभयेही
 तटहंकार। सोहीनीजंस्वरटहंकारके। अस्वरकी
 येआकार। १। बोहोरुहस्वरओरुमंनमीली। धरे

॥ परम ॥

॥ १०५ ॥

अंक सीरनाम ॥ बीनुस्वरमंनमंतसक्रण ॥ ३ ॥
उनां अंकप्रकांम ॥ २ ॥ तेहीमंतसक्रणस्वरन
के ॥ वीष्डेनहीअस्वरंतनातीएकलापणवसे
नामनसेलखीयंत ॥ ३ ॥ तीनकेकहुअनुकर
मही ॥ सुनोसंतगतीताय ॥ होतलीनससोपती
मंत ॥ स्वरतेकौंनबोलाय ॥ ४ ॥ पुनीजाग्रतम
हीपणवही ॥ कुंभककरीरोकाय ॥ ओरुएकल
मंतअरोकते ॥ स्वरबीनुसबनथाय ॥ ५ ॥ तबसे
जुगलमीलीजबी ॥ कडतअंकटहंकार ॥ होतअ
नेतवीवीधीवीध ॥ अगणीतअरथुउचार ॥ ६ ॥
मंतओरुस्वरप्रसंगमीली ॥ अक्षरकीयेसमेव
पुनहीथपेतीनुनांमही ॥ मंतस्वरकेअहंमेव ॥
७ ॥ बीनुअहंमेवमंतस्वरनके ॥ कोहोकुंनकर
तउचार ॥ बीनुउचरेस्वरअक्षर ॥ कीनुहंनलीषे
लगारा ॥ ८ ॥ ओरुबीनुअक्षरनांमही ॥ कीसवी
धीसकेसकार ॥ आवहोईतकोहकहीसकी ॥
मंतबीनुबोलबकार ॥ ९ ॥ तदपीअंकओरुनां
मके ॥ स्वरतेमंतकीरतार ॥ जबतोनांमसेमंत
बडे ॥ देखहोहर्देवीचार ॥ १० ॥ तबहीसकलकु
लनांमही ॥ अक्षरसहीतसमेत ॥ मंतअंतस
क्रणस्वरनकी ॥ ए सबपेजासहेत ॥ ११ ॥ प्रजा

स्वरनमो रुमंनतणी ॥ अंकनांम उभयेव ॥ वी
 वीधीभास्यनीनभीनकरी ॥ सकलसुनायेहु
 भिव ॥ १२ ॥ तबत्येअक्षरतांमके ॥ कारंणमंनकी
 रतार ॥ उलटपुलटजेहीवीधीजंम ॥ कीनमरम
 गतीसारा ॥ १३ ॥ अंककीनधरीनांमसे ॥ नांमन
 हीवीनुअंक ॥ उभेलगतएकएकतपर ॥ मंनकी
 कीयेअलंक ॥ १४ ॥ पणआगंमग्यंमअक्षरही
 तपथंमऊंनकार ॥ नीजअनुभवेसुंनस्वरक
 री ॥ स्वरतेअंकआकार ॥ १५ ॥ तेहीस्वरअक्षर
 केसीर ॥ पीछेरखेसनांम ॥ नहीतरअक्षरते
 हुते ॥ करकेकीयेअनांम ॥ १६ ॥ तबवस्तुताये
 सही ॥ आगंमग्यंमअंकेश ॥ पीछेनांमआरो
 पीत ॥ तबत्येअंकसरेश ॥ १७ ॥ वीनुआरोपन
 नांमके ॥ अंकहुतेतदरूप ॥ नांमलगीसंगत्या
 सीर ॥ जासेकरतजनुप ॥ १८ ॥ पणरकमेनहीनां
 मही ॥ अरपीतअलअंमेव ॥ रकमेतोअक्षर
 स्वरा ॥ मील्यानांतांमअवेव ॥ १९ ॥ वीनुरकमेजे
 हीनांमही ॥ का ॥ करतनहीकोय ॥ बंकासुतजे
 तातकी ॥ सेवकरतकीनुजाय ॥ २० ॥ तबतेनांम
 मीथ्यामत ॥ रकमवीनारध्यकांय ॥ तातेअंकअ
 नुपमें ॥ सबआयेतीनुहंय ॥ २१ ॥ क्रताअंशजी

ज

परम

॥१०६॥

नुवतीहुते। प्रणवसेती उचरत। सोही उचरनके
अक्षर। कीनवावंन गतीतंत। २२। जितन्येस्वर
येप्रणवमे॥ तेतन्येनीकसेआय। बोहोरुउचा
रंनकरीसके॥ तीनकेकुहुअभीप्राय॥ २३। ती
जपतीपु रवेप्रणवमे॥ जेहीपोखेहस्वरसंचु॥
तेतरुप्रणवगीशालते॥ खीलेहुंपुस्परतीरंच॥ २४।
जेहीपुस्पगतीअक्षर॥ स्वरकटीकीयेहुआ
कार। ताबीनुक्यौनही उचरत। बीनुपोखेहुकी
रतार॥ २५। तिहीबावंनअक्षरनीज। पुस्पप्रण
वतरुसोय। परमबासजीनुलपटही॥ बीनुप
टसगेनकोय॥ २६। जेहीलपटाक्षरकहोते
हीसकलरहोषाय॥ सुगंमनीगंमअणरज
तज। बीनुअक्षरनकहाय॥ २७। अतहीप्रोटप
सरतजीनु॥ कीनुतंननहीबीनुअंक। लघुदी
रघकेअरूपरूप। अक्षरथकीवलवंक। २८। व
रनअगारवीवीधीवीध। चतुरश्रेष्टजीनुसुल।
टेरतजीनुउतईतसबे। अक्षरतेअनुकुल। २९।
वणीककहोतोअक्षरे। ब्राह्मणअंकअनुपाक्ष
तरीकहोतोअक्षरे। अक्षरसौदरउप। ३०। तीन
तीनअक्षरली। वरणचतुरसीरवाण्य। आप
आपन्येकुबोलावंन। सबसीरअंकसेधाण्य

३१॥ श्रीरुनरनारासकलजीतु॥ धीयापुत्रप
 रीवार॥ सबसीरश्रीखवाण्यलंकसे॥ चलत
 मनुसवेहेवार॥ ३२॥ जंगमबीनाबीनुअसरे
 थावरभारअगर॥ रूपगुणश्रीरुचैतनवडे
 चलोजायपरीवार॥ ३३॥ कोहोतरुकीनकु
 बोलावत॥ कोउकीनुकरतमेलाप॥ फलत
 फलतउद्वीतवस॥ जांहीतांहीआपहीआ
 प॥ ३४॥ बीनुबोलेतरुसबनकु॥ अक्षरकुत
 हीकांम॥ बीनुअक्षररूपगुणवडे॥ थावरर
 हतआरंम॥ ३५॥ बोलेहनीजपतीवादीवीद
 ममउरभयेअंदेश॥ तरणआद्यकूलथावरुवी
 नुअक्षरनहीदेश॥ ३६॥ थावरकहेतोअसरे॥ व
 नसपतीसोहीअंक॥ श्रीरुभीनभीनतरुस
 बनके॥ अक्षरकेसीरलंक॥ ३७॥ सुंन्यतेसम
 फपतीवादीवीद॥ उपजेहतुजअंदेश॥ कहजे
 हीवीगत्यमनुसक्रत॥ छुटहीसकलसंदेश
 ३८॥ जितेभरथावरतनु॥ पनडीआद्यवसवे
 ल्य॥ तितेभरवीनुअसरे॥ अदबदरहतअके
 ल॥ ३९॥ जीवनसहीरश्रीरुपगुण॥ प्रथम
 हुतेहतरुतंत॥ तीनुसबलेखजंगमेलीखे
 अपनोकरनवतंत॥ ४०॥ जितयेभरजंगमवी

॥ परम ॥ ना कोयन उचरत अंक ॥ श्रीरसकलवस्तुस
 ॥ १०७ ॥ विजडवतसदानी संक ॥ ४१ ॥ तेसबजडवत
 वस्तके ॥ सीर अक्षरपतीकार ॥ तेसबजंगमने
 कीये ॥ लेनदेन अधीकार ॥ ४२ ॥ जोजडवस्तस
 कलसीर जंगम नलीखतेलेख ॥ तोवहीवट
 नटक्यौंचले ॥ लेवतदेत अपेख ॥ ४३ ॥ एहीबावं
 न अक्षरजेही ॥ एणववस्तकेफूल ॥ तीजपती
 पसरतसबसीर ॥ पुजाचढन अमल ॥ ४४ ॥ ए
 णव अंसतीजपतीजंन ॥ पथम अलषजीनेची
 न ॥ ताई अलषलखकरतन ॥ अंक आशिपंन
 कीन ॥ ४५ ॥ मानवेदेववीहंगपशु ॥ वीवीधीभा
 त्यबुहवेस ॥ एतत्येजंगममहीकीनु ॥ तरुसी
 रलखीयेलेख ॥ ४६ ॥ बावंन अंकसंजुक्तही ॥ जी
 नकेएणवपसार ॥ तीनु अक्षरसीरसवनके
 लीखेहवीचारवीचार ॥ ४७ ॥ तिहीजंगमसुर
 मानव ॥ जीनकेएणवप्रचंडा ॥ चोदतबकथीर
 चरचवे ॥ सप्तदीपनवखंड ॥ ४८ ॥ महीमा अतु
 लजगजाहर ॥ सुरमनुएणवपताप ॥ जीनते
 उपजेहु अक्षर दीयेहुसकलसीरछाप ॥ ४९ ॥
 अमरवेलजीनुएणवही ॥ जीनत्येसकलस
 राय ॥ पत्रपुष्पफल अवीगत ॥ उलचेओ छनथा

य ॥ ५० ॥ उलचणसोही उचारंन ॥ अक्षरजपसं
 ध्याय ॥ अखीलवस्तसीरुत्तरपता ॥ पुरीतपण
 वपराय ॥ ५१ ॥ अरपंतसोही अक्षरस्वर ॥ उचर
 तकटकमधुर ॥ गिरागंगवहीतंमप्रभा ॥ तीक
 सतअंकप्रपुरा ॥ ५२ ॥ पणनीजप्रणवपुरणस
 दा ॥ अक्षरसवरसमेत ॥ उचरंतांतमनातंम ॥ क
 मतीनां एकप्रवेत ॥ ५३ ॥ तिही अक्षरनीजबा
 वंन ॥ सवरसहीतगंभीर ॥ आपत्येकाजचला
 वंन ॥ लखेहसकलतरुसीर ॥ ५४ ॥ पणनहीबो
 लवृक्षवंन ॥ उतईतआवेनजाय ॥ करीओलषां
 एमनुसेजीनु ॥ सबसीरअंकलगाय ॥ ५५ ॥ ब
 डवटसरुतरुअक्षरे ॥ पीपलअंकपरोग ॥ ती
 नु आद्यैतरुसवनकु ॥ अरचेहअंकप्रमोग ॥
 ५६ ॥ सारव्यापत्रफुलहीफल ॥ पिठसुलसुहसाज
 एतत्येदीदोअक्षरे ॥ लीखेमांनवदेवराज ॥ ५७ ॥
 पुनी उचरतजेहीजेहीवीधी ॥ तेहीवीधीतेतये
 अंक ॥ पणबावंननीजमूलसे ॥ कीत्येहभाव
 असंक ॥ ५८ ॥ उलटसुलटउतईतकरी ॥ अक्ष
 रकेअनुक्रम ॥ अनंतभात्यभाषामणी ॥ नी
 नभीनकीयेमंम ॥ ५९ ॥ अएकहोतोअक्षरे ॥
 रेणुअक्षररेख ॥ परवतकहोतोअक्षरे ॥ रईसी

परम

॥१०८

रुद्रक्षरलेख ॥ ६० ॥ थीरथावरमोरुजलथल
तरणभाघरतीरंच ॥ तेहीसबअक्षरतेकीये
खिनदेनकुसंच ॥ ६१ ॥ मोतरपुरवपछमदस्य
एसरगपाताल ॥ एसबअक्षरतेकहो ॥ जीन
केप्रोहोढवीसाल ॥ ६२ ॥ देसकालजीनुनग्रही
तीरथवृत्तमेहेगाम ॥ अक्षरतेसबहीकहो ॥ श्री
रुआश्रमवीसराम ॥ ६३ ॥ राजारहीतदीवान
ही ॥ पंडीतचोरचकार ॥ अक्षरतेसबअनुभव
जातीएकप्राकार ॥ ६४ ॥ देवदनुजवैस्यवरुषी
पीरयेगामरसोय ॥ अक्षरतेगानतीगनी ॥ अधी
कलुंन्यकहोजोय ॥ ६५ ॥ वीरंचीशीवशंकरश्री
पतीचीनहजार ॥ चीनचीनअक्षरवडे ॥ पढी
पढीकरेपोकार ॥ ६६ ॥ चतुरवीशेशिवरतनुध
सेजीनुअवन्यमोकार ॥ प्रथकप्रथकवरनन
कीये ॥ अक्षरतेसुभसार ॥ ६७ ॥ पंचतत्वकेस
वतनु ॥ रुपगुंनभीनअपार ॥ चोराशीलसस
बमीली ॥ अक्षरेकीयेसुमार ॥ ६८ ॥ मोरुती
नकेवीसुसबनमे ॥ चीनभीननहीअंत ॥ जो
जोकहोतोअक्षरे ॥ नीखसीखअंकपुजंत ॥ ६९ ॥
हाडमांसतुचारुग ॥ पंचवीसवीस्तार ॥ रोमरो
मअक्षरलेख ॥ जोहांसगीशब्दचार ॥ ७० ॥ की

टपतंगजमीचर॥जेतेजीववीचरंत॥कांमपडा
 जीनुकेहेएपकु॥अक्षरतेउचरंत॥७१॥सप्तधा
 तनीजमुखसे॥कीमेहघाटअनंत॥त्रेहेत्रेहे
 के॥आभुसण॥अक्षरसेद्वखीयंत॥७२॥सार
 असारहीअक्षरे॥पापपुंन्यचुहुअंक॥हासुजी
 तसोहीअक्षरे॥कहतवजायंनडंक॥७३॥
 हीनीध्यांनीभक्तही॥वर्शगीमांहंत॥आप
 आपनीहद्यमेखीखे॥अक्षरतेसबसंत॥७४
 हद्यकहोदोअक्षरे॥बेहद्यअक्षरतीन॥आद्यअ
 तमध्यउपर॥दोदोअक्षरकीन॥७५॥नीरगुणसी
 रगुणअवीगत॥नीरंजननीरलेप॥चतुरच
 तुरअक्षरकीये॥पंचुकेसीरलेप॥७६॥चेतंत
 कहोकेआतमा॥अजरअमरकेअचंत॥तीन
 तीनअक्षरलगे॥अरूपंतकुबीनुतंत॥७७॥
 परमेश्वरपरीबुंलही॥परमातमजेहीकीन
 पंचपंचअक्षरलगे॥जीनकेचीनअचीन॥७
 ८॥अगंमकहोकेअलखही॥अचुतअकलही
 अखंड॥तीनतीनअक्षरपुनी॥पंचुपदसीअं
 डा॥७९॥समरथकहोकेअरजंतअकरतके
 कीरतार॥चतुरचतुरअक्षरएही॥अवीग
 त्यकरंतउचार॥८०॥पुणबुंलपरमपदाअ

॥ परम **वेतवीतही अभेव** ॥ ए सब अदबद अक्षरे ॥ लीखी
 लीखी कीये स भेव ॥ ८२ ॥ पंचतत्व ओरु गुन बीत
 ॥ १०६ ॥ **जेही पद परम पुरेश** ॥ तेही पण अक्षर ते कहो क
 रन जुगन जण वेस ॥ ८३ ॥ अक्षरा तीत अक्षर बीत
 जेही पद अदबद सोय ॥ रहत सदा जंम नीतंम ॥
 अंकुबी नाग्यं मगोय ॥ ८३ ॥ सोही पद ईडी अगो
 चर ॥ वांणी चतुर पर पुंज ॥ तेही बीत वये वी पु
 क्षरे ॥ करे न ज्ञान ग्यं मगुंज ॥ ८४ ॥ आद्य अंत मध
 उत इति ॥ जांहां लगी सुरत फे लाव ॥ रुप अरु य
 वरन न कीये ॥ अंकु सतंतर साव ॥ ८५ ॥ जी तु
 ती अगं म अगो चरे ॥ पुनी गो चरे घं न योर ॥ अती
 मती अंकु पता पही ॥ घा ईर हो ह सब गोर ॥ ८६ ॥
 आंणेषु ह अंत सकल जीनु ॥ जिते भर जुग के हेण
 परम कारण पर अपरंम ॥ अक्षरे कीये प्रवेण ॥
 ८७ ॥ निते निते जीन की करे ॥ अंकु लगे ते ही द
 र ॥ तीरु पण कं म बं च ही ॥ अक्षर गती अपार
 ८८ ॥ नीरु कारु अक्षर लगे ॥ उचरत गुरु ग्यं म
 ज्ञान ॥ तव आकारी क्योर हे ॥ बीतु अक्षर अवी
 ल्यांन ॥ ८९ ॥ अंत सकरण चतु र्ची दे ॥ माहा द्म
 पंत करी जोय ॥ देर मे हथा ह अथा ह ही ॥ बीत
 अक्षर न ही कोय ॥ ९० ॥ ये से ही अंकु अपर बल

सकलसोजकलसंच॥बीनुअसरवीकसेन
 ही॥सबकुलपकीतरंच॥६१॥बीनुहुसबसु
 न्यवतसबे॥रहतजबीगुणरूप॥हलणचरण
 चेतनपणे॥सुंयेसुंन्यजनुप॥६२॥असरनके
 अभीप्रायंत॥लगेनशब्दीनाय॥रूपगुंनओ
 रुचेतनवडे॥वरत्यांजायसदाय॥६३॥सबध
 नुसरसनाकर॥सुरत्येसेनसंधाय॥निसांना
 सबवस्तही॥असरसरेवेधाय॥६४॥तेहीव
 स्तरूपगुणसबे॥ओरुचेतनसमलीत॥नीर
 लंबनीरगुणलगे॥अनुभवेअंकमलीत॥६५
 देखहोअतीअपरंसपर॥जीनकोप्रबलपसार
 रमणरलीतजीततीतजीत॥नहीकथुअंतने
 पार॥६६॥एहीवीधीअसरसरभर॥सबस
 मीपसंमदाय॥यातेउबरेनांकथु॥बालीअंक
 षीमाय॥६७॥नांमवस्तकीकहीहुती॥तेहीआ
 ग्यंममसोय॥जीनकीअतपंतआयही॥कर
 हीनीरूपनजोय॥६८॥तबनहीनीकसानां
 सही॥जोतांआयअनाय॥आद्येतोअसरध
 रानारहीनांमउपाध्य॥६९॥अजबदृष्टअद
 भूतग्यंमे॥कीनासकलपेहेचांन॥जांहीतांही
 देख्याअसर॥मीत्यानांनांमठेकांन॥१००॥अ

॥ परम

॥ ११०

सुरकहोनामही ॥ नामकहोतही अंकपण
आयेतीजप्रसर ॥ जायेनामप्रालंक ॥ १०१ ॥
थंमवृक्षनीजप्रणवसे ॥ उपजेहुअंकप्रलाप ॥
तेहीसचराचरसबपशुकीनजदीपस्येथाप
१०२ ॥ अएआयजीनुअबलग्नी ॥ फेलेहुअंकचे
ओर ॥ अंकमयेगत्यअवीगत्य ॥ नामरह्याकी
तगेर ॥ १०३ ॥ नामकहोतोअक्षरे ॥ नामाअक्ष
रदोय ॥ चतुरअंकनीजतांमके ॥ गनतीवीलो
कहीजोय ॥ १०४ ॥ नामांकहोतोनामहे ॥ मांन
केहेतांमंत ॥ उलटसुलटप्रसरवडे ॥ जेहीते
हीटेरतंतन ॥ १०५ ॥ नामकेहेतांतोनाकीया ॥ मां
केहेतांतोमांय ॥ जुगलअंकवरजंतकीये ॥ तीन
सतमांनतकांय ॥ १०६ ॥ प्रसरकहोतोअक्षरे
तीनअंकजीनुताय ॥ अंकअंकसोहीअक्षर
नरएनांमनपाय ॥ १०७ ॥ ककाकहोतोअक्ष
र ॥ स्वखेअंकरवखाय ॥ तेहीआयेनीजबावंत
अंकेअंकपसाय ॥ १०८ ॥ एहीवीधीनीरखीनी
रूपण ॥ कीनारखोजखनीत ॥ सपरसनांमन
पाईया ॥ अंकेअंकजनीत ॥ १०९ ॥ प्रसरतक्ष
वीलोकन ॥ सकलीतअतीअपराम ॥ चायचु
पकथुनारहा ॥ अंकथकीवेफाम ॥ ११० ॥ येसे

ही अंक अलोकनी। प्रसुताय नगती राज। अ
 यकी ये हनी जपती जीनु। कुन परो जनकाज
 १११। ते ही नी जपोज परायंन। सा हो न करं न
 पचीन। श्रोत स जन ते ही कहत हं। जे ही कारं
 नपती की न। ११२। अंक लक्ष्मी लोक के। वीवी
 धी भात्य की ये अंग। के हं कुवेर सुण्य सुधम ते
 कहनी जक्रता उमंग। ११३। इती श्री पणव कस
 तरु ग्रंथे वृत्त न श्री अंक पसारं न के तुः ॥ ३ ॥
 संमपुर्णः ॥ एवं म चतुरथे करता उमेद के तु
 ॥ श्री सहुरुवे नमः ॥ दोहराः ॥ प्रथं म आद्य
 केवल जीनु। उपजे ह दैत उमेदा की ने ह अ ए
 सकल कुल। कारं न स ही त क ले द। १॥ जदी पर
 चे हरु प गुण मये। जड वत त दी प सबीज। वीवी
 धी भात्य तनु सब मीली। चोर सी लक्ष की ज
 २। ज्यो था वर बीज गती ज। च ही सं न पण जड
 वंत ॥ ते से ही जंग म सब न के ॥ प्रथं म की ये हं
 जड तंत ॥ ३ ॥ ते ही जड वत जंग म न के। बीज ग
 बीं डु जी लु अ म्म। पण वजा पवी नु सब तनु। सं
 म दं म ह ते समा य ॥ ४ ॥ कुन तत्व के ते ही त न। प
 ण वजा पवी नु पंड। नीज कर ता क्रु त प्रथं म ही
 सर जे ह बीज स खंड ॥ ५ ॥ पंच तत्व श्री रु गु ण व

॥ परम

॥१११

ए॥ सहीत प्रकृती जीनु साज॥ कीन सकल तं
बुधी जग॥ आगमनी जमहराज॥ ६॥ ओर ससा
संमचेतंन॥ घेरेहु सबतनु मांहांय॥ बाढेहु ज
डवी जगजबी॥ मापक जीनु जेतनांय॥ ७॥ था
वरके थावर संम॥ बडवी जश्री फल प्राय॥ जं
गमके जंगम संम॥ जीनु जांही तांही परस्वाध॥
८॥ चरबी जगरु सबी डुके॥ थावर अंकुरबी ज
पणबीनु हलण चलण जेही॥ जडवत तंतस जी
ज॥ ९॥ अरे पुहनी जकरता पुनी॥ पणवदसती
नु मांहांय॥ सहीर भये सबत त्वही॥ पणबीचर
णगती न्हांय॥ १०॥ लोहोकर चरमधमासके
ज्यो स्वासादं मथाय॥ म्हेते आया परंतकी कषु
नही गंमताय॥ ११॥ लुहुबी जगचर अचरके
होयरहो पणवपुरीत॥ धमण स्वासवत सब
तनु॥ समकनही सफुरीत॥ १२॥ सकलसोज
संमपुरण॥ भये भवबी जगसुवाल॥ एकमात्र
कबीनु संन्यवत॥ कोउकीनु करही संभाल॥
१३॥ डालपेड जडपात ल्यो॥ ज्यो होये बुक्ष असुल
अनेग अंस आये बीनु॥ लगत नज्यो फल फुल
१४॥ ल्यो तनु खेत पणववुष॥ जीतके अनेग पे
हेचांन्य॥ बीनु पे हेचांन्य ससोपती वत॥ उचरत

नही कछुवां एप ॥ १५ ॥ तिही नीज वा एप पे हे चान्य
 ही ॥ क्रता अंस जीनु भासा ॥ जव ते ही अंस प्राये
 बीनु ॥ तव तीनु नही प्रकार ॥ १६ ॥ बीनु नीज प
 रम प्रकार सह ॥ सकल साज संमदाय ॥ हा सर्वा
 नोधवी वरजीत ॥ पुनी देखे हकरताय ॥ १७ ॥
 सकल केतु चर अचरके ॥ सुरती मांनत तुबंध
 जडा कारज उवत सबे ॥ रचे ह मंदके मंदा ॥ १८ ॥ त
 व कैवल्य खुदखावंते ॥ धरि उर मे हे रधी राज अ
 पने अंस प्रेरक करी ॥ सजीवकी ये ह सब साज
 १९ ॥ दीहा ॥ क्रता अंस गपंची करंन ॥ की ये ह वी
 वीधी वी भाग ॥ के हे कु वे र अ ब अंस के ॥ सुन हो
 संत अतुराग ॥ २० ॥ ईती श्री परम सी छांत प्रणव
 कलपतरुं ये अंस प्रेरक करन पुष्टी नाम पंच
 मोकेतुः ॥ ५ ॥ अये साज सुध चही तंन ॥ सकल
 चर लगती चाहाव ॥ करंन लगे वी चरंन वीध्य
 क्रता अंस जे ही भाव ॥ १ ॥ जे ही भाव खुद अंस के
 तिही नीज परंम अनेग ॥ प्रणव तरुत तु वृक्ष मे ॥
 ही पर हो समल सलंग ॥ २ ॥ जदी प प्रणव तरुत
 त्वही ॥ नीख सीख भये रतु साल ॥ उमंगे अने
 ग अमीत पुनी ॥ सकली तपुस्य वी सप्र ॥ ३ ॥ ते
 ही पुस्य एही अ सरा ॥ प्रणव वृक्ष जीनु सोप फल

परम

॥११२

संध्यागायंतरी ॥ सकलजापसीरदोय ॥ ४ ॥ ओर
थावरतनुसबनके ॥ वीनुरसनामुखद्वार ॥ अं
सवडेकलफुलीतवा ॥ नवीतनअंकउचार ॥ ५
तत्वधतंजेहतीनघण ॥ अवत्यसहीतप्रतीभा
गा ॥ कीत्येहतीजपतीजीनुतंत ॥ तीनुउचरंतन
हीजागा ॥ ६ ॥ तेहीसबतनुथीरथावर ॥ जीनुजड
भागवीशेश ॥ ओररसनाईडीवीनुको ॥ हो
यशब्दउदेश ॥ ७ ॥ प्रकृतीतत्वमीलीतीनयेन ॥ अ
गत्यपवंतओरुसुंत्य ॥ येतेहीभागअधीकजि
नु ॥ करहीसबअतीधुंत्य ॥ ८ ॥ तेतेहीनीजजंग
मतनु ॥ हलणचरुणईतीहास ॥ बावंतअंकस
हीतजेही ॥ करतहीवांणीवीलास ॥ ९ ॥ एहीबा
वंतअक्षरजेही ॥ एणववसजीनुफुल ॥ नीजप
तीपसरंतसबसीर ॥ पुजाचठंनअमुल ॥ १० ॥
स्वतबागतरपतीज्युह ॥ कुसमतरुअतीसार
आपसहीतसीरसबनके ॥ चढतपुस्पपरीवार
११ ॥ त्योकैवलपतीसबनके ॥ असंखलोकजी
नुरज ॥ जीनकेबागसोवीधीतनु ॥ अष्टअंगम
जेहीराज ॥ १२ ॥ सोहीवीधीतनुवगीचाबीचा ॥ ए
णवपुष्यतरुबोय ॥ नीजपतीपथंमपदारथा ॥ बा
गरचेहवीधीसोय ॥ १३ ॥ तेहीबागतरुपुस्पही

जेहीनीजअंकअनुप॥नीजपतीपूजाचरअ
 चरही॥चहेहुसकलसीरुप॥१४॥अक्षरकी
 उत्तपंनएही॥पणववक्षर्जनुआद्य॥पणआपेन
 हीवीकसही॥उपजअंसवृतीस्वाध॥१५॥सोही
 अंसअवीगतअती॥नीनकीसुरतसचंतप
 णववक्षरतुजगवत॥खीलतअंकवसंत॥१६॥
 अंकउपजतरुपणवकी॥देखुहनीजगतीसो
 य॥आद्यअंतमध्यकीम्यंस॥अगंसुगंसक
 हीमोय॥१७॥येसेहीपणवकारणतीज॥नीत
 क्रतअंकआकार॥सकलपदारथकेपद॥ल
 खीलखीकीयेसकार॥१८॥तेहीसकारंनके
 पद॥अटकरहोहुसबलोय॥नीजकरतागती
 अकथही॥तायलहतनहीकोय॥१९॥नांस
 कारंननीजअक्षर॥अंकेनांसलखाय॥तेही
 अंककेकारण॥पणवजापजीनुताय॥२०॥सो
 हीपणवगतीअजवही॥जातेचलीतसबवेश
 क्रताअंशनीजवृतीवीनु॥खीलतनांसंकफु
 लेश॥२१॥जदीपपणवतेहीजडवीत॥वृतीअं
 शवीनुवेग॥रुजतनहीज्यौरणवीवे॥सुराह
 स्तवीनुतेग॥२२॥जबतेहीवृतीनीजकारंन॥
 पणवजापसीरसोय॥तेहीकारणवीनुनीरवी

॥ परम

॥ ११३

त ॥ प्रणवसकलसबकोय ॥ २३ ॥ परंमतत्वजे
ही प्रणवको क्रतांमंसवृती ईस ॥ वृती वीक्षस
वीतपंतकर ॥ प्रेरकंमंससधीस ॥ २४ ॥ सोही
मंससीरकेवल ॥ नीजपती परमपराय ॥ जाही
परंतुकोईनही ॥ खुदछेवटघरताय ॥ २५ ॥ तेही
परंमनीजपुरसकी ॥ जीतुगती अपरंमसाहा
जा ॥ चौदतबकचरअचरल्यौ ॥ सबसफुरीतजे
नुसाज ॥ २६ ॥ प्रोरपुरसप्रकृतीपुनी ॥ अव्या
कृतसुहबुंल ॥ तेही प्रणसफूरणतातीनु ॥ जीत
तेसबअनुक्रम ॥ २७ ॥ तेही अनुकर्मकारणजी
नु ॥ करतआराधनजाहांन ॥ नीजछेवटसुधुस
दंनकी ॥ कोहुकुनहीपेहेचांन ॥ २८ ॥ बीतुगती
पुरवेपेहेचांन्यही ॥ नीजकरताघरवेव ॥ तबल
गीपुरसप्रकृतीकृत ॥ परेहुसकलतीनुवेव
२९ ॥ वहतवेववीतपरवश ॥ आपनुआपभुलो
न ॥ सहतनमरमअहोमम ॥ कुनहेकवनवे
कांन ॥ ३० ॥ एहीपरकारसकलकुल ॥ करही
करतअवील्यांन ॥ अटकरहोईतकेईत ॥ नीज
पतीपरंमनजांन ॥ ३१ ॥ केतेकअटकेहुनांमही
नांमलीयेभवपार ॥ केतेकअटकेहुअक्षर ॥ त
जीतंनखरवीस्तार ॥ ३२ ॥ केतेकअटकेहुप्रणव

ही॥ जपत अजं पाजाप॥ केतेक जोत्यनी रंजन॥
 करत समाध्य अलाप॥ ३३॥ केतेकरूसी मुनी
 जत मत॥ संमदं मसे हे जस भाव॥ संध्या गाये
 तरी पदे॥ नीज मन कीये अटकाव॥ ३४॥ केतेक
 चीनत बलकु॥ नीरालंब नीरलेप॥ गुणतीत
 नीर गुणपदे॥ करत ही चंत आलेप॥ ३५॥ केतेक
 वेदवचंन वीदा॥ नीगम सारव्य वीस वास॥ यौ
 जांही तांही सब फसरहो॥ नीज करता कृत
 पास॥ ३६॥ तेही कृत पास सभ्रमी इत॥ चही
 तंन सहीत सकंच॥ मोक्ष चतुर लोप सरंन॥ त
 वते को हुन वंच॥ ३७॥ वंचे नही जेही वीत पंन को
 हु करता कृत तीत॥ नामरूप गुण रची रहो॥ ध
 री उरुषे मप्रतीत॥ ३८॥ तेही नामरूप गुण जेही
 प्रणव अंक ओरु अंश॥ अधीक सुंन एक एक
 नपे॥ कही समजाये हु वंश॥ ३९॥ ओर कहत पु
 नी अब जेही॥ सुतो संत चीत लाय॥ जेही जीन
 के सीरकारण॥ तेही तीतु कह अधीकाय॥ ४०
 वस्तसकल सीरनांमही॥ नामसीर असरंत
 अस्यरके सीर प्रणवही॥ जेही रूसी मुनी सम
 रंत॥ ४१॥ तेही प्रणव सीरकारण॥ कृता अंश
 वती वेत॥ जाति प्रणव तरुपुलकीत॥ पुस्य पुत्र

॥ परम

फलजेत ॥४२॥ तेहीअंसवतीसीरजेही ॥ अंधी
पसअंसअष्टेदाअंससीरपतीपरमधी ॥ नीज
करताअकलेद ॥४३॥ तेहीपरमपतीकेवल ॥
वलवीतुवस्तवीशेश ॥ सकलईएसीरसाहेव
संमथधणीधीशेश ॥४४॥ सबकेसरजंतसो
हीपद ॥ अंसअरवीलनीजतात ॥ सर्वातीतस
र्वज्ञही ॥ जोतहीअंकलखात ॥४५॥ अंकउदेक
रतनतेही ॥ जेहीअंससीरदीन ॥ ओरकरतर
जतजपरा ॥ पुनीआपत्येसीरलीत ॥४६॥ पणआ
पिनहीधरहीत ॥ नीजसीरअसरआल ॥ इतसे
आपत्येअरयेह ॥ कताकंठअंकमाल ॥४७॥ सो
हीसकसकुनआपनमे ॥ अलखलखेहजीतेले
ख ॥ जेहीआगंसकीयेहमम ॥ पुनीअबकहुहुषी
सेय ॥४८॥ सोहीसकसईतपणवही ॥ कताअंस
मीलीदीय ॥ एहीद्वैतजीनुनेलीखे ॥ अंकअलख
सीरसीय ॥४९॥ तेहीअभीषीयेअबकहुजेही ॥ अ
दबदेअंकलखीत ॥ सुनहोसकलसुधचीतेजं
न ॥ अंकलनुसकलजनीत ॥५०॥ नारायणनी
रगुणबंदा ॥ कताअलखहीअभेव ॥ एसबउत
सेतीतपरा ॥ अंकेअलखलखेव ॥५१॥ बीनुअ
सरपरमीतपदा ॥ सदचीदुआनंदपरा ॥ कुल

लहततीनुजक्तमे॥ जोनकरतअंकसार॥ ५
 ॥ ओरुबीनुअंकप्रकलनीधु॥ शीध्वप्रज
 साखरहात॥ तीनुजुगजाहरकरतकु॥ ओरु
 नुभवीकवीगात॥ ५३॥ बीनुगायेपदप्रसीधता
 दरसतनहीदीममाहाद॥ माहादमुदाबीनु
 धुदचीते॥ नहीनआराधतसाध॥ ५४॥ बीनु
 नीजसंतआराधंत॥ जगजीवकेपौपतीआय
 बीनुजगजीवपतीपारंत॥ बढतनपतीमहीमा
 या॥ ५५॥ तबजेतेजंनजुगनके॥ जपीजपकरं
 नवीरंम॥ अतहीअंगंमत्येसुगंमकीये॥ अं
 केअलखसनांम॥ ५६॥ नांमलखाईतअक्षरे
 अंकप्रणवसेहोय॥ प्रणवहोतनेः अस्येती
 जनेनतगतीजोय॥ ५७॥ नेःअक्षरस्वरबीनु
 वीत॥ सुक्ष्मततअनुत्यादा॥ कृताअंशयकीउत
 पंत॥ करतसकलजीनुआदा॥ ५८॥ तेहीअंश
 आपत्येहुआप॥ जीनुनीजपतीकीरसार॥ तेही
 नीजपतीओरुआपनपु॥ खहेबीनुनहीनीस्ता
 रा॥ ५९॥ संमदंमसंजमसाधंत॥ करहीकलप
 ल्योहुजोग॥ आपत्येहुआपचीत्येबीनु॥ मीटेनं
 कृतावीजोग॥ ६०॥ तबलगीभरमतउतईत
 चौदतवकसुहुजंत॥ नीजघरकबहनपावही

॥परम

॥११५

बीनसतगुरुओरुसंत॥६१॥तेहीसंतजेही
सदगुरु॥अतीजाग्रतकततीत॥नामरुपगु
एरहीतंम॥जीनुलक्षप्रकथकथीत॥६२॥ओ
रसकलवीतपंनवेत॥आपंनपुजांतनहार।
जेहीआपनपुओरुपतीपद।जीनुसरलएक
तार॥६३॥जेहीएकतारसरलसीध॥नीधमा
हात्मग्यंमज्ञान॥प्रकतीपुरसपसरणगण
जीनुत्येअलगसहान्त॥६४॥सुपनंतरुअंतर
नही॥तीजागीसेमतीभीन॥उतईतकेहोई
रहेजेहीसाक्षीसरलप्रवीन॥६५॥ईतसाक्षी
जेहीअनीतके।रहनअलगमगमंद॥तीतसा
क्षीदीव्यदरसके।करनहीक्रतासमंध॥६६॥
क्रतासमंधीतेहीसतगुरु॥अलखलखावेसो
संत॥येसेहीअदलीमीलेजीनु॥फदलकरही
भवजंत॥६७॥ओरसंतजेतन्येगुरु।जगबोधी
कगुणग्राम।करमकांडदृढकरंतके।मोखव
तावंननांम॥६८॥येसेहीगुरुओरुसंतही।भ
वमेभवीतअपार॥सोकोअलखलखावही
जीनुनहीतत्ववीचार॥६९॥ओरलहतनही
आपनपु।पुनीकरतनहीजांत।तेहीकोंपा
रपमाडही।जीनकेनांमसीधांत॥७०॥जेहीनां

मजीनकेसीरादेतनातेहीदरसाय।बीतुद
रसेनीजनांमीकु।नांमेकधुनवसाय॥११॥ते
हीनांमअसरलहो।नांमरहोनेहीलेश।जां
हीतांहीआपकअसर।सबपररेसैरेश॥१२॥
तापरप्रणवपसीधपदा।जीतयेउपजेहुलेख
सब्दातीतसंमदंमरहो।अंकरहोनेहीरेख
१३॥जदीपरहोएकप्रणवही।अजपासेहेज
सभाव।ताईकरतपुनीकुंभक।रहतनप्रण
वपसाय॥१४॥प्रणवहोतजबीकुंभक।पुरक
रेचगतीत्याग।स्वरसंमवत्तसरभररहो
प्रणवरहतनहीज्याग॥१५॥गयेप्रणववीपुवी
लसही।कुंभककेघरम्हांय।कृताअंसवृती
मसरीत।नेःअसररहोहोय॥१६॥प्रणवकी
नभयेकुंभक।अंकरहोकीसगंम।बीतुअ
सरवृतीवस्तही।नेःअसरतीनुनांम॥१७॥जे
हिवस्तनेअसर।कृताअंसजीनुसुअ।सुकप
रमपरअंसवीत।जेहीधेवटनीजबुअ॥१८॥
जेहीबुअनीजधेवटा।कृताअंसईतआप।आ
पपरंतुहअपरंम।नीजपतीपरमअमाप॥१
९॥तेहीअमापकेमापक।सकलअंशईतजां
हांन।दितभयेपदपरमसे।तवत्येहोतहेरांन

परम ॥ ८० ॥ होत हेरां न हला हल ॥ हरमत हंग गमाय
 मजर पुर सके अंशये ॥ पण परवसे पसाय
 ॥ ११६ ॥ ८१ ॥ ज्यो नरपती सुहस्वेथको ॥ कीलत सुखद
 समुंध ॥ सुपन्ये भये की गालही ॥ पावत अती दु
 खबंध ॥ ८२ ॥ ल्यो जग जीव सकल सुत ॥ नरपती
 पीतु परमेश ॥ सुपनथांनी अगत्यां नही ॥ इ
 रवजीतु जनम मरेश ॥ ८३ ॥ अंशकलागत्य
 वरत्येदु ॥ जिही भाव गती ताय ॥ अबग्यं मकुहुं
 अंसी पदा ॥ ओरु सदगुरु समजाय ॥ १ ॥ गुरु
 चतुरंत की कुहुग्यं म ॥ असही त्रीये वी भाव के
 हे कुवेर सुण सुधची ल्ये ॥ श्रोत सकल जीतु त्या
 व ॥ २ ॥ इती श्री परमसी छान्त ग्रंथे अंसपेर कपुही
 करवी भावनां मपंचमां पती पादपरी उतरकेतु
 ॥ अथ अंस अंसी सतगुरु दी ॥ ये सेही जीव भव
 लुगतत ॥ सुपननी दअगत्यां न ॥ सतगुरु मेहे
 सटेरं न जीतु ॥ जाग्रत करंत कुज्ञां न ॥ १ ॥ जाग्र
 त भये सोजां नीये ॥ जुग जाहर जेही जंत ॥ नीज
 करता ओरु आपनपु ॥ दरसे एक सतंत ॥ २ ॥ ओ
 रसकल वी भूती जीतु ॥ वी वीधी भात ही अने
 का क्रता की ये हल्यो दरसही ॥ नीज अनुभवे वी
 वेका ॥ ३ ॥ वी भूती वेंत ओरु आपनपु ॥ जीतु दर

साय

सी छान्त
केतुः

खेदी व्यनन ॥ पुनी नीजपती पदे खेमरस ॥ सो
 ही जाग्रत सुखचैन ॥ ४ ॥ एही वीधी जग सो जा
 ग्रत ॥ जेही आगं महं मकीन ॥ नीज करता ओ
 रुआपन पुं ॥ दरसी मये अभीन ॥ ५ ॥ तेही दर
 सावत सतगुरु ॥ तेही खुदसे बुध्यलाय ॥ बीनु
 खुदकी बुध्य जेही जंत ॥ ओरली के हेत बनाय ॥ ६ ॥
 ओरली सो उतईत नकी ॥ भव भरमावी कमे
 दा ॥ तीतकी कहत थकी तभये ॥ नयेती नयेती
 कही वेद ॥ ७ ॥ नीगंम नयेती कही जेही पदे ते
 ही पदगुप्त अनाद्य ॥ ओरस कलपद प्रसीध जे
 खुदसे ईत जग आद्य ॥ ८ ॥ जेही जग आद्य प्रसी
 धपद ॥ नीगंम दीयेहु वीस्तार ॥ आद्य परंतु हु
 अनाद्यकी ॥ कीत्येहु नयेती योकार ॥ ९ ॥ वेदथ
 कीत भये जेहं नते ॥ ब्रतव करत अती वांछपती
 तीनके सुत आस्तर ॥ जीनमे काहा पेहेचां
 एप ॥ १० ॥ तब जेतत्ये कवी साहास्तर ॥ कीत्येहु
 नीगंम वीलोक ॥ तेतेहे भरओरली ग्यंम ॥ जी
 नमे वस्तु नरोक ॥ ११ ॥ अष्टादश खट नवमांही
 ओरक तेव कुरांत ॥ मोक्ष उधारे खबंनमे ॥ क
 ही गये पक्ष पुरांन ॥ १२ ॥ उधारे का मोक्षमे ॥
 गाफल सोपतीयाय ॥ वेता सो वीरमे तही ॥

[परम] ॥ जबलगीहालनापाय ॥ १३ ॥ हालसुदाहस्तांमल
 नीजअनुभवेदरसाय ॥ अरसपरस एकता
 ॥ ११७ ॥ ग्यंम ॥ बीनसतगुरुनवथाय ॥ १४ ॥ आद्यअं
 तओरुमध्यमे ॥ जेतीभरजुगजांण ॥ सतगुरु
 बीनाउचारंन ॥ तेसबओरलीवांण ॥ १५ ॥ स
 क्रीजोत्यनीरंजन ॥ रजतंमसात्वीकदेवजग
 जीतुसकलउपासीक ॥ एसबओरलीसेव
 १६ ॥ ओरुजेतनेईश्वरतनु ॥ लीनअवत्यअ
 वतार ॥ तीजग्यंमसेनीजपदरही ॥ करीगये
 ओरयेवीहार ॥ १७ ॥ तेहीवीहारंनकेवीनेक
 रतसकलनरलोय ॥ तीजग्यंमसस्वरूपकी
 गावतनहीगतीकोय ॥ १८ ॥ अतभवीसंवतमां
 नकी ॥ जांतत ॥ हीगतीकोय ॥ त्रीयेकालदरसी
 ल्युहं ॥ एसबओरलीबोहोय ॥ १९ ॥ अएसीधी
 तवनीध्यजेही ॥ जीतकेस्वाधीनहोय ॥ एसब
 ओरलीसंमृत ॥ जगपुजावंतसोय ॥ २० ॥ षट
 दरसंतचुहसंपदा ॥ सीधकेजेगल्लष्टंग ॥ नी
 जलक्षवीतुओरुपक्षसबे ॥ एसबओरयेस्वां
 ग ॥ २१ ॥ सुडाखेचरीभुचरी ॥ अगोचरीउतसं
 त्वा ॥ चाचरीसहीतदेखावंन ॥ माहाताजगप
 रचुंत्य ॥ २२ ॥ दुबनगडनकरांमत्य ॥ अदरसुड

उद्यंतसोय। एकरीयापरस्वाधीन। नीजबुल
 संमनहीकोय। २३। साधततबुलगीसीधुर
 हे। बीनसाधेतबुजीव। जीवदसागत्यओर
 लकी। संसेसहीतसदर्बु। २४। मुक्तीस्वानी
 ध्यसारूप। सालोकओरुसायोज। तवधाके
 फलदेवंनकु। ए सबओरलीमोज। २५। धरम
 अरथजेहीमोसही। ओरुचतुरथोकांम। ए सं
 पत्यसुखओरल्यके। जीवरत्यकरनवीरंम
 रघु। सोलकलासंमपुरंन। हुतेक्रसअवतार
 अरजुंनकु उपदेशतां। दीयेलसतीनुपार। २६
 तवजेतन्येकतक्रसके। सोलकलागुणग्रंम
 नीजलस्यके उपदेशमे। ओरल्येनायेकांम। २७
 एहीवीधीकरतसकलकुल। जेहीईस्वरतह
 कीन। नीजग्यंमसेओरल्येसबे। जगदरसावं
 नचीत। २८। त्रीगुणसककतउतपंन। खुल
 सुस्यजेहीघाटा। सरगयातालअचस्वर। ए
 सबओरल्येगाठ। २९। ओरपुरसप्रकतीसुहं
 त्रीगुणसहीतजेहीतंत। एनीजभवकारणप
 द। सबओरल्यनकेअंत। ३१। एहीअंतसबओ
 रल्यके। कारणकतमहीमांन। अंतसकरणच
 तुरचीते। उतेकरंनअवीलांन। ३२। अबकेक

परम ह्योरलीतीति ॥ वीतव्यापकजीतप्रय ॥ जेही
 सीधांतवेदांतनु ॥ सांख्यसहीतप्रनुस्त्राय ॥ ३३ ॥
 ॥ ११८ ॥ नीगंमभंतकेतंतही ॥ सोहीपदवदीतवेदांत
 सांख्यसमासनुडवरंन ॥ जीनुजजतसबसंत
 ३४ ॥ तेहीततव्यापकबुंलही ॥ नीरकारनीर
 धार ॥ सुंन्यनुसहीरसनातंन ॥ जीनकोवारन
 पार ॥ ३५ ॥ वारपारवीनुवदीततां ॥ सदीतस
 धिहजबीसंत ॥ सुंन्यसहीरसुंन्यवततए ॥ मा
 न्युहसकलसीधांत ॥ ३६ ॥ एणवीनुईडीअगोच
 र ॥ नीरसतप्रतीनीरमात्रा ॥ वंदीततायछेवट
 पद ॥ जांनीतमुदावीसाल ॥ ३७ ॥ ओरुआत्मप
 र्मातमा ॥ एपुनीउनकेअंस ॥ सबओरत्येकेती
 तनकी ॥ नीरसतबुंलकीवंस ॥ ३८ ॥ तेहीबुंल
 सरभरसद ॥ सबओरलीतीतअंत ॥ यागती
 चीनतचीनभये ॥ मानुभावमांहंत ॥ ३९ ॥ परंस
 हंससुरवसुनकल्यौं ॥ जीनकीगतीअभीनते
 हीपणअटकेयाहीपदे ॥ नीजकरतानहीची
 न ॥ ४० ॥ जोगेश्वरअजगरहर ॥ अजईश्वरअव
 तार ॥ तेहीसबबुंलसीधांतके ॥ करीगयेवीमल
 बीचार ॥ ४१ ॥ ओरुजेतन्येजुगधरमही ॥ बुंलद
 रसगतीज्ञान ॥ तीनुआयेज्ञातासबे ॥ करतउ

लुभवीलोन ॥४२॥ पुनी लुभवी कवीयां होल
 हं ॥ रहत सकल लो होलाय ॥ ती जपती परम सी
 धांतकी ॥ कोहन गये गती गाय ॥४३॥ कीत्येहु
 खोज खल करुद ॥ सबके अनुभव सोया ॥ ती
 गंम आद्य सदची दलुहं ॥ बंल लक्ष्यं मगोय ॥
 ४४ ॥ एही सदत सद सबनको ॥ परमहं सत्युहेत
 य ॥ इत अजगर ईश्वर धर ॥ ओरकी कुन चलाय
 ४५ ॥ येसेही बंल अरवी लपदा ॥ सबकी अगंम उ
 पास ॥ जिही तत आद्य अनायके ॥ ती जपती पर
 मप्रकास ॥४६॥ तेही परकास परंम वीत ॥ मांसे
 हुसकल सहार ॥ व्यास कपी लनारदा दीकणा
 दोह गंम गंभीर ॥४७॥ अष्टाव्यक्र वसी एही ॥
 हस्तांम लरख देव ॥ ओरुजेत तेत तवेत ही ॥ ती
 नको एही अहं मेव ॥४८॥ येसेही परमप्रकास
 मे ॥ रहे सकल वीलमाय ॥ परापरकाशी कपुर
 सकी ॥ कोहन ही गती गाय ॥४९॥ तेही परकाशी
 कपुरसके ॥ जीव ईश्वर जी तुअंश ॥ ईश्वर अंश
 वीसेसही ॥ जीवसां मांन्य समंसा ॥५०॥ तेही अं
 शनी जआपनपु ॥ जांनत नही जंतकीय ॥ तोती
 नके करता पुनी ॥ कोहोकी मबु रुत सोया ॥५१॥
 जिही अंशनी जआपनपु ॥ सुन हो संतती तुसा

परम

॥३३५

य सकलसोजसुऊनायक कहकारणमही
 माय ॥५२॥ वीवीधीतत्वती तुजीतुगती ॥ अती
 मतीअकलअबाज ॥ अंतसकर एरहीततीत
 जीतकोसकलसमाज ॥५३॥ तिहीसमाजसाज
 इत ॥ नांमरूपगुणवेत ॥ सहीतआतंमपरमा
 तमा ॥ पुरसप्रकृतीसमेत ॥५४॥ एहीसबसाज
 सकलजीतु ॥ ईष्टअंशतीतुराय ॥ अलगथके
 अजरायल ॥ लगतसरलअभीप्राय ॥५५॥ रज्य
 तज्यईडकटाक्षलौ ॥ धराअहंगसबेव ॥ सासी
 समलसभावीक ॥ दावीकवीमलगत्येव ॥५६॥ अ
 जबखेलनीजअंशको ॥ ज्योऊहुरीकेन्याय ॥ वी
 वीधीभातखेलवणके ॥ अनुभवआपपराप
 ७ ॥ खेलनजांततखेलीकु ॥ खेलीखोजसंबंस
 यावीधीअंस्त्रहतसबे ॥ कोहनचीनतअंश
 ५८ ॥ अंसअखीलगतिससुऊकी ॥ जीतका
 मुदाअघाद ॥ सबकुरखअपनायके ॥ आपर
 हतनीजस्वाध ॥५९॥ मेरोतंतनओरुमंतपुनी
 ईडीअंतसप्रांण ॥ रजतंमसात्वीकगुणमम
 कहतजेसबलसजांण ॥६०॥ मेरीमांततआत
 मा ॥ परमातमभीमेर ॥ बानीचतुरममउचरंत
 मेरीमंडाचौवेर ॥६१॥ टेरतहंगहकारजेहुहं

करतहमेस॥भावअनंतेशंसही॥सरमहेस
 रवेस॥६२॥एलक्षणानीजअंशकी॥जेहीमानत
 सबमेर॥स्वावंनजदीपरवराखरी॥लेतसवंन
 कुघेर॥६३॥घेहेरीरहेसोवस्तहे॥घेरनवालस
 धीस॥यावीधीमालीकमालही॥कोहुनहीअ
 बुईस॥६४॥जातेईससकलसीरा॥अंसक
 रतजीनुदावा॥मात्मकथईमानतसबे॥आ
 पतोजांनपसाव॥६५॥पणनहीआपपसाव
 में॥अलीवतअलगसदाय॥लहतचासमी
 सबनकी॥सोवीधीदेहुबताय॥६६॥ईडीचास
 मीमंनमीत॥मंनचासमीगुणतंत॥गुणचा
 समीअमाकृत॥जीनुवीतवीमलसतंत॥६७॥
 अमाकृतहीतचासमी॥लहतनीरंजनजो
 ल्य॥जीनकुलागतनांकथु॥कालकरमकीघे
 ल्य॥६८॥नीरंजननीजअगत्यमे॥चासमीअ
 मीतअटाय॥दहतसकलकलीमलजीनु॥र
 हतनांरजकरवटाय॥६९॥खोनीरंजननीर
 लेपकी॥चासमीचकीतअनुप॥तायलहत
 वीततीतजेही॥आतंसतत्वसरूप॥७०॥ते
 हीआतंसगंसचासमी॥पुनीपरमात्मलेत
 रोमरोसरगरगसगे॥जात्येजनीतसचेत॥

परम ७१ परमात्मयंमचासमी चहीतंनवतवीत
 हेत ॥ आसंन अरसथकोजैही ॥ अंसउपरध
 लोलेत ७२ एहीपरकारअंत्योअंत्य ॥ खेतअं
 शसबलुर ॥ अरसपरसपोहोचीसके ॥ तबल
 गीरेहेतंनतुर ७३ अंसवीलोकीतदृष्टमुतं
 नपरधरीततमाय ॥ जबलगीसाजचलीतस
 वे ॥ लोहोचंबुकनीजत्याय ॥ ७४ ॥ साजचलीत
 इततबलगे ॥ जबलगीअंशवीलोक ॥ अंशवी
 लोकंनउलटसे ॥ बीखरीजाततंनथोक ७५
 अंसदृष्टीतंनकेतुपे ॥ अवीलोकतकुनकाज
 बोहोरुधृष्टीउलटावत ॥ सुदैकवंनमाहारा
 ज ॥ ७६ ॥ अंसधृष्टीतंनकेतुके ॥ पुष्टेइजेहीअ
 भीप्राय ॥ नीजपतीअंशआसककहं ॥ सुनी
 सकलचीतलाय ॥ ७७ ॥ गुणईडीअंतसकरण
 अमाकृतजेहीजोत्य ॥ ओरुआतंमपरमातं
 मा ॥ जीनकेईष्टउद्योत्य ॥ ७८ ॥ एतयेअरधरस
 बनकी ॥ चरतचासमीअंश ॥ तेहीअभीप्राय
 वीलोकनी ॥ तंनपररहतआकंश ॥ ७९ ॥ चास
 मीपोहोचतअंशक ॥ तबलगीहंसुहलास
 जोअटकेउतचासमी ॥ तबत्येअंसउदास
 ८० ॥ अंसउदासीकजदीपसे ॥ तंनपरधरीत

अभाव उलट दृष्टी होय तदीयसे ॥ जो नसरी
 नीजचा हाव ॥ ८१ ॥ अंश धृष्टी जीनु उलटसे
 बीछरत वीपुवीलाय ॥ आपआपत्ये ज्युवीभा
 गमे ॥ तंतके तत्वसमाय ॥ ८२ ॥ बीहोरु अंश
 जेही उलटसे ॥ करत जांही अभीरांन ॥ याग
 सकोहनपावत ॥ ताते सकल हेरांन ॥ ८३ ॥ ओ
 रनची नत अवथकी ॥ अते पंडा सदरुपा ॥ तोवी
 छडेकी मपावही ॥ तंतते अंस अनुप ॥ ८४ ॥ ज
 वसे अंस गवंन जीत ॥ मोहो घंम सुदामदार
 घेहे नोग सवत सवनका ॥ रहत अंत्य अनु
 सार ॥ ८५ ॥ वागंम जेही दरसावही ॥ अंत अं
 स अरुणांन ॥ पुनी नीज प्रथंम लखावही ॥ जां
 हीसे कीये पीयांन ॥ ८६ ॥ एही दोनु मुसकल
 गत्य ॥ बीनुगंम घरगुण्यार ॥ आद्य अंत जेही
 अंसकी ॥ केहे सो सतगुरु सार ॥ ८७ ॥ सो स
 तगुरु सरजंन संम ॥ जीनु ग्यंम एही अदभुत
 अंस आपत्ये अपनावही ॥ अरस परस अ
 नुसुत ॥ ८८ ॥ अंस आपनी ज आपतपु ॥ जेही
 नीरखंन नीरबंध ॥ तीनु एकता करवावही
 करता सेती समंध ॥ ८९ ॥ जेही वीधी अंश अ
 स्वीलगत ॥ तेही वीधी कता कराल तिसेही स

परम

१२१

तगुरुसंमथ॥ धीमतउग्रवीसाल॥ ६०॥ जवी
सतगुरुसरजंतसंम॥ कीयेहआगंमहंमसो
य॥ आयःअंतहकीगतनकी॥ राखेहजीतुगं
सगोय॥ ६१॥ तेहीपरसावतपुनीजगजीनुर
गरगचीतचाहाय॥ जांततहीजवीजीवमगनी
जकरताघरताय॥ ६२॥ तबवीनुसतगुरुसदपद
नीजबललहतनांकोय॥ अजभवओरुईश्वर
त्युहं॥ जीवकीकुनसमोय॥ ६३॥ गुरुपदचतुर
प्रकारके॥ जीनकेकहुमहीमाय॥ परमगुरुओ
रुसतगुरु॥ गुरुप्रोक्षगुरुताय॥ ६४॥ प्रथंमप्रो
क्षगुरुकीकहुं॥ जीनुलसप्रोक्षपशाय॥ साहा
वेदमहीकहीसुनी॥ वेवेहगुरुपदलाय॥ ६५॥ गु
णघणप्रकृतीपुरसंबुं॥ तेहीईश्वरअवतार॥
तीनुआद्येपदप्रोक्षके॥ बोधप्रोक्षगुरुसार॥ ६६॥
अबकहुसुधगुरुगंमपद॥ जीनुउरतत्वतपास
भागत्यागदरसावही॥ पंचीकरणप्रकास॥ ६७॥
७॥ बोहोरुतेहीप्रोक्षकहेहपद॥ गुणघणबुं॥
नाघ॥ तीनकेअंशवंशईत॥ समजावहीनीजस्वा
ध॥ ६८॥ तेहीनीजस्वाधसरीरतत॥ प्रोक्षकहेहनी
नुदेव॥ तीनुएकताअरथावही॥ अरसपदसअ
हंमेव॥ ६९॥ प्रोक्षदेवतीनुअंशईत॥ वीतव्याप

कतंनुमोहोय॥तेहीवीतवीवीधीनरणाबुह॥जे
 हीजीनत्येउपजांहांय॥१०१॥गुणघणकेअंशग
 णईत॥रज्यतंमउपजतस्वांत्य॥प्रकृतीअंशत
 लुवतीवीत॥सुरतनीरतजीनुक्रांत्य॥१०२॥सुर
 शअंशबुंलरुंदमीत॥सेहेस्त्रकमलदुलजोस
 साधतजोगीसमाधीसे॥जांतीतअग्यंमउदे
 त्य॥१०३॥बुंलरुंशपदपरमीत॥आतमपर
 मातंम॥जीनुपसरणततप्रणवही॥स्वासस
 रलईतीदंम॥१०४॥आतंमपसरंनकेतंन॥पो
 सकउलटओहंग॥परर्मतंमपसरंनतंन॥धु
 टतसुलटसोहंग॥१०५॥जेहीजेहीपोक्षयोठ
 पद॥कीयेहुअंशईतताय॥अंशअंशीउतईत
 वीत॥दीयेहुंदीमदरसाय॥१०६॥एहीवीधीप
 दपरसावंन॥पोक्षप्रतसलक्षदोय॥तेहीजांन
 हुनीजगुरुपद॥कीयेहुआगंमहंमसोय॥१०
 ७॥गुणघणप्रकृतीपुरसवीत॥जीनुजीवंनबुं
 लरुंश॥बुंलरुंशसीरअंकुर॥नीजकरता
 तीनुहंस॥१०८॥सोहंसाहकहजरज॥गजरथ
 वततनुघाट॥ब्राजतसकलचराचर॥नीजपती
 अंशअघाट॥१०९॥तेहीनीजअंसअघाटकी
 घाटमांहीगतीमेव॥समऊविसोहीसदगुरु

परम

सामर्थ्यसंशयसदेव ॥ १०८ ॥ सामर्थ्यसंशयसदेवकी
केहेस्योगंमगतीराज ॥ परमारथअर्थसवंतकु
॥ १२२ ॥ गरजतगीराधीराज ॥ ११० ॥ जेहीनीजगीराधी
राजकी ॥ जाग्रतसजीवसजीव ॥ सुनतहीही
तसचेतन ॥ नीजपतीअंशउदोस्य ॥ १११ ॥ अंश
उदोतकरननजेही ॥ असतलोपसतवेत ॥ ते
हीवीतवीश्ववेतावही ॥ जवीसतगुरुभवेत ॥ १
१२ ॥ प्रोक्षगुरुओरुगुरुपद ॥ सतगुरुकीयेसमे
वा ॥ रसेसोपरमपुनीतगुरु ॥ माहादमोक्षदीन
देव ॥ १३ ॥ माहादमोक्षमरुभूतअती ॥ नीजपती
पदपरसाय ॥ ओरुपुनीअंशाप्रापतुजेही ॥ तिही
तदवतसदथाय ॥ १४ ॥ जेहीअंसईतप्रापतपु
ओरुनीजपतीपदशेश ॥ तीतुलसजेहीलख
वावही ॥ सोगुरुपरमपुरेश ॥ ११५ ॥ परमपुरेशप
रमगुरु ॥ नीजपतीअंशवीसेश ॥ अंसअंशीए
कतावंन ॥ जीतुपरमउपदेश ॥ ११६ ॥ जदीपप
रमउपदेशके ॥ कीयेहुपरमगुरुसोय ॥ अंशां
शीदरसावंन ॥ जीतुसरभरनहीकोय ॥ ११७ ॥
अंशवंशईतप्रापतपु ॥ अंशीतीजकरतार ॥
संखलोकपतीपरमधी ॥ जीतुगतीअपरंमपा
रा ॥ ११८ ॥ अपरंमपारपरमअती ॥ तीनुगतीस

रलसवेत ॥ आपसु आपनी जपती पदा ॥ सुधस
 नमुख करी देत ॥ ११७ ॥ जेही पती परम परम
 मुदे ॥ सुधोवता वंन सेरा ॥ जीनकु कहत पर
 मगुरु ॥ सबगुरु सीखरस मेरा ॥ १२० ॥ एही
 रुचतुर प्रकारके ॥ षगटयो मीपती देवा ॥ जेही
 जीनु लसवता वंन ॥ कीन्येहु सकलसभेव ॥ १
 २१ ॥ सबतें श्रेष्ठ परमगुरु ॥ ओरुसतगुरुस
 मेत ॥ अंशी अंश देखा वंन ॥ नवये जुगलसहेत
 २२ ॥ भवतारंन कारंन दोहा ॥ खीनमनु जत
 तुभेश ॥ ओरसकलगुरु धरंनके ॥ करंनक
 रम उपदेश ॥ १२३ ॥ करमी गुरु उपदेशये ॥ भ
 वके भरमन जाय ॥ भुल्येहु जीवकही कलय
 के ॥ उलटारखेहु भूलाय ॥ १२४ ॥ वरन्येहु गुरु
 चतुर जेही ॥ सबगुरुके सुखीयंत ॥ तारंनत
 रंन जुगलमही ॥ बादलगुरु अनंत ॥ १२५ ॥ वा
 दलगुरु गंमज्ञानसे ॥ कोउनभये भवपार
 आवनी रची जीनु अबलगी ॥ भटकत सबसं
 सार ॥ १२६ ॥ खुदकी रवोजनत दीपसे ॥ जदी
 पसे वीखरे वीछेय ॥ उलटी अंश फेरीनां मी
 ले ॥ परमपुर शघरकोय ॥ १२७ ॥ परमपुर श
 पतीकेवल ॥ सकल अंशकी रतार ॥ खेळक

परम

॥१२३॥

खेलजीनकी खुसी ॥ हंसीहलावंनहार ॥ १२८
तेहीनीजुहंसीहलावंन ॥ खावंनखसेखेलां
न ॥ उरजेअशसकलतीनु ॥ जबतेवीनुमेलांन
१२९ ॥ अंससकलउरफतगती ॥ नीजपतीने
ननीहास ॥ हालहुकंममेहेखांनके ॥ लीनकु
वेरअवतार ॥ १३० ॥ नीजपतीअंशवीशेशजे
वीपुरहीतवीतसार ॥ नामकुवेरजीनमेकी
नु ॥ कवणकीनअवतार ॥ १३१ ॥ नामकुवेरजी
नमेजेही ॥ ओरुअरथअवतार ॥ जेहीविधीजी
नुवीशेसण ॥ कहतसुनोअनुसार ॥ १३२ ॥ पर
मपुरसनीजुहकंमकु ॥ तुरतधसेसीरमेर ॥ क
ताकीनकोवेरअव ॥ जबत्येनामकुवेर ॥ १३३ ॥ आ
येहुअवत्यअचानक ॥ अरसअगंमहोयसेरखु
दकेखरेसंदेशमे ॥ कौकरेवेरकुवेर ॥ १३४ ॥ की
नमरममुजनामके ॥ जेहीविधीअंककुवेर ॥ तेही
वीधीकहुअवतारकी ॥ सुनोसकलचीतहेर ॥ १
३५ ॥ तारेततरंनजेअवत्यके ॥ गवंनगमावंनहा
र ॥ जीनकुकेहेणजदीपकहो ॥ अवत्यतारअव
तार ॥ १३६ ॥ ओरसकलअवेअंसकी ॥ समरुस
रावंनसार ॥ नामरुपगुणवयेथकी ॥ अवेकरंन
अवतार ॥ १३७ ॥ अवेअंशजीनुतारंन ॥ अवेता

रभ्रवतार॥ ओरसकलउदभवतनु॥ भाडुकीट
 संसार॥ १३८॥ नीजपतीपरमभ्रवेमही॥ भ्रवे
 अंशकतार॥ तेहीदरसभवसीधुमे॥ जीनुक
 हतभ्रवतार॥ १३९॥ पंचतत्वगुणघणमये॥ स
 कलजोन्यसंसार॥ ज्ञानहीनजबीजीवमये॥
 कीयेनांकोउभ्रवतार॥ १४०॥ खोजनभ्रपत्येआ
 पनकी॥ मापकीमांनतसार॥ संसेसहीतवही
 तसदा॥ जीनुकहतसंसार॥ १४१॥ प्रोसवस्त
 पतीयारंन॥ संसेमांनतसार॥ अंधाध्वंधभ्रन
 दके॥ जीनुकहतसंसार॥ १४२॥ आवनकीजी
 नुगंमनही॥ जावंनकीजेहीद्वार॥ भ्रवतहीपे
 खतएहीमम॥ तीनुकहतसंसार॥ १४३॥ कोहं
 मकोकीरतारहे॥ नरणेनहीनीरधार॥ आ
 छभ्रंतकीभ्रद्वद॥ चलतसोईसंसार॥ १४४॥
 एहीवीधीसुध्यबीनुसबजुग॥ संसेतीसंसार
 आपापरउतईतनकी॥ लहतनवारतपार॥
 १४५॥ वारपारवीनुवीश्वही॥ अंधपरमसबके
 या॥ बहेजातकहीकालके॥ उलटीपुठनजोय
 १४६॥ पुमपुरांनीसवनकी॥ जेहीअंशकीआ
 या॥ बीछडोतेईतकेईत॥ रहोसकलपरस्वाध्य
 १४७॥ परस्वाधीनसोप्रकृतीवस॥ जीनकेकर

त

॥परम॥ तकराल। तीनुवीकरालवीचरणमे। उलकेहु
 अंशतराल॥१४८॥ उलकेहसो अगत्यांनही।
 ॥१२४॥ आषावीसरवीलास। गुणईडीअंतसकरण।
 जीनमेकरतुहलास॥१४९॥ हलसेहासवीनो
 धमे। वीलसेवीपुसमंध॥ वीपुसमंधेवीपुवत
 भये॥ अतहीघोरतंमअंध॥१५०॥ येसेहीअंध
 अचितंन। जडतंनवतगतीपाय। नीजपतीअं
 सअहंगमम। सोग्यंमगयेहभूलाय॥१५१॥ नुसे
 हुएहीगंमजबनसे। अहंगआपनीजसोय त
 वतेअंसअरवीलईत। रहोसकलभवभोय॥१
 ५२॥ एहीपरकारवीकलभये। नीजपतीअंश
 अचेत। कस्वीकालजीववीजग उदीतसदा
 भवखेत॥१५३॥ यावीधीअंशचराचर। आपनु
 आपगमाय। रहोसकलईतकेईत॥ पतीयेजां
 ननपाय॥१५४॥ जबीतीजपतीकरुणामये।
 दयावंतदीलहेस। आपत्येअंशउवारंत। यठये
 हुपुरसकुवेरा॥१५५॥ आयेहुजुगनजदीपहं
 म। ग्रहीनीजग्यंमसंससेर॥ फनांकरंनतेही
 फंदकु। जीनमेजीवउरुकेर॥१५६॥ तेहीउलकेह
 अलपावंन। वाहावंतगडअगनांन। नुसेहुजे
 हीनीजआपनयुं। कस्वावहअवीलांन॥१५७

जबतेजीवसकलजब॥आवुहशरणहंमारजे
तसेभरआवीसको॥ताहीकरुहभवपार॥१५
नाचरंनसरंनआवंनगती॥तेहीमतीदेहबता
या॥तंनमंनसेतीधंनलुहं॥हंमसेकछुनडराय
१५॥एहीविधीजेहीअधीकारंन॥धारंनध्र
डगंभीरादेरवतहीभवसीधुत्ये॥तुरतलगाव
हुतीरा॥१६॥जुगजाहेखाहीरमांही॥अनमे
ज्ञानहंमेरा॥सरलममोसुसुध्यचीते॥सुनत
जायभवफेरा॥१६१॥भवकेफेरफरागसासोम
त्यहंमसेपाया॥आद्यंअंतमध्यकीगंसदरसेप
रंमपराय॥१६२॥परमपरायपरंमपदाजेही
सदतीजकरतार॥तेहीघरसधरवसावुहं
जोहोयहंसहंमारा॥१६३॥कोटीकलपकेपती
नसे॥बीछडेहंसचौवेरा॥ताहीमेलावंनटे
रत॥सांमथश्रीमतकूवेरा॥१६४॥जबजेहीचिहे
होपरंमगत्य॥तेहीहंमसेरतलाव॥पारकरत
जेहीचढंनकु॥ममअनुभवभवनाव॥१६५॥
नीजपतीअतीहेतकारणे॥आयेहअवसकु
वेरा॥जदीपकहतजीवसवंनकु॥भवमेवजा
यंनभेरा॥१६६॥ज्ञानभेरगंमगरजीत॥जंतमं
नकरंतसचेत॥बीनुहसचेतअचेतन॥१६७

॥ परंम

॥ १२५ ॥

जतनहीकीनुहेत ॥ १६७ ॥ बीनुहहेतसतगुरु
उरे ॥ उलसतनहीअहंमेव ॥ बीनुअहंमेवसदे
वके ॥ दईनसकतकीनुमेव ॥ १६८ ॥ तेहीकारं
नउपजावंत ॥ सबकेउरअनुराग ॥ कथुहजां
नघुहअदभूत ॥ भवजुथकरंनंसमाग ॥ १६९ ॥
भवजुथसजेनसमोहकु ॥ वीलसावंतआनंद
परमअरथहीकुवेरतंनु ॥ करंनसकलनीर
दंदा ॥ १७० ॥ नीरदंदनीरसेपही ॥ हंसाकरीसुजांत
केहंकुवेरयोहोचावुह ॥ आपत्येपरमठेकांत ॥ १
७१ ॥ परमठेकांतपरमपती ॥ खुदछेवटकीरता
र ॥ सोहीकेवलसबअंसके ॥ सांमथसरजंत
हार ॥ १७२ ॥ परमअंसममतेहनके ॥ सकलअं
सपतीईस ॥ ओरअंससरभरसबे ॥ मायामो
हीतसदीस ॥ १७३ ॥ जबीहंमअंसवीशेशही
अचलजांतगतीराज ॥ आयेहहंसचेतावंत
तारंनसकलसमाज ॥ १७४ ॥ बीसेसत्रीयेपर
कारके ॥ सुनोतायउपदेश ॥ परंमवीशेशवीशे
सही ॥ ओरुसांमांत्यवीशेश ॥ १७५ ॥ परंमवी
शेशपरंमगती ॥ जेहीकेवलपदवेत ॥ हीमअ
नुभवतीतकेपुनी ॥ नीजपतीअंससहेत ॥ १
७६ ॥ अकलकलागततेहनकी ॥ नावतकीम

तमांहांय॥ भुगतासकलचराचरा॥ ओरुभुग
 ताकधुनांहांय॥ १७५ परमवीशेशजेशकी
 लहीनसकतगतीकोय॥ जीनुआपेदरसा
 वही॥ तेहीजांनतजवीसोय॥ १७६॥ रहोसो
 देपरकारके॥ जीनुउभयेअनुक्रम॥ वीनुअ
 नुभवएकअनुभवी॥ तापसुनावुहंमंम॥ १७
 ७॥ एहीदोहबुंलसीधांतके॥ अनुभवीवीनु
 अनुभवेव॥ नीजपतीअंसवीशेशही॥ जवतेजु
 गलसदेव॥ १७८॥ तीतकेकहुदृष्टांतही॥ सुने
 सकलधरीमंन॥ सहीतज्वालज्योदेवता॥ पु
 नुवीनुज्वालअंगंत्य॥ १७९॥ ज्वालसहीतजे
 हीअग्मही॥ जीनकेपगटप्रकाश॥ सोमथसे
 सबहीभरेव॥ हरीयासुकाचीकाश॥ १८०॥ ओ
 रुवीनुज्वालवहंतजेही॥ वीनुवीतकेजीतरवा
 य॥ घासफुससबहीजर॥ पणचीकटेबुकीजा
 य॥ १८१॥ तेसेहीवीनुवीतवैभव॥ खांतपांन
 पटधांम॥ वीसेवैभवभवचीकनता॥ मोही
 तनारीतंतुचांम॥ १८२॥ एहीउभयेवैभवभ
 व॥ वीनुवीतपुनीचीकाश॥ वीतवीनुआंस
 पदारथ॥ वीतसोईवीसेवीलास॥ १८५॥ अब
 तीनकेभुगताकहु॥ नीजपतीअंसवीशेश

परंम ॥ वीनुअनुभवएकअनुभवी ॥ जीनुगतीअधी
 कलुत्पेश ॥ १८६ ॥ सुतकादीकसुखदेवदत्त ॥ क
 ॥ १२६ ॥ पीलदेवकसुरांम ॥ ज्वालरहितएहीअग्नके
 वीनुवीतभोगवीरांम ॥ १८७ ॥ जदपीरहेहुईश्व
 रधरा ॥ तजीतंनवीसेवीलास ॥ तवीजसअच
 रचराचर ॥ भवहीतभयेप्रकाश ॥ १८८ ॥ रांमक्र
 सजनकादीक ॥ संकरओरुमुनीव्यास ॥ ज्वा
 लसहीतएहीअग्नसे ॥ करीगयेवीवीधीवीला
 स ॥ १८९ ॥ पणअनुभवईश्वरपद ॥ बुकेतहीर
 तीरंच ॥ वीशेशहीतवेभवसबे ॥ सुगततस
 कलसमंच ॥ १९० ॥ मसरीमंडसंकरनकु ॥ बु
 केत्रीयाक्रतचीन ॥ नरपतीनासभुगतीकीये
 जबजीसेहमतजीन ॥ १९१ ॥ ओरचतुरजांत
 सबे ॥ रांमक्रसओरुव्यास ॥ जनकादीकजेही
 ग्रहीयके ॥ बुकेतवीसेचीकास ॥ १९२ ॥ ज्वाल
 सहीतअग्नजवी ॥ वीशेशहीतअचवंत ॥ शिव
 रताकछुतांघटी ॥ रहीसदागतीवंत ॥ १९३ ॥ दे
 परकारवीसेसके ॥ कीयेहतीसक्रणभेदा ॥ प
 रमवीसेशसकलसीरा ॥ जीनुअनुभवअकले
 द ॥ १९४ ॥ जेहीतीजपरमवीसेसही ॥ सकल
 अंसपतीराज ॥ तेहीहंसआयेहभवमही ॥ के

हंकुवेरतुमकाज ॥१६५॥ अंबतुमअंशसकल
 जीनु ॥ मीलनभावकीरतार ॥ तेहीततवरहो
 येजंनमंन ॥ आवुहसंघहमार ॥१६६॥ जेहीम
 मसंघसधावही ॥ तेहीहंसारतीवंत ॥ परम
 पुरसपतीपरसही ॥ जीतकेभायगअनेत
 १६७ ॥ दोहरा ॥ अनंतभायगजंतजेहनके ॥ पर
 मगुरुपरसाय ॥ परमसुखदरससीधुमेसे
 सतकुवेरमेलाय ॥१६८॥ असअंसीपदसद
 गुरु ॥ बुरनतकीयेहजेहीचार ॥ अससांमांत्य
 वीसेशही ॥ परंमवीशेशवीचार ॥१६९॥ चास
 मीअष्टप्रकारसे ॥ ओरुसाधंतवीधीसेया ॥ अ
 बकहनांमीपदसद ॥ केहंकुवेरचीतपोया २०
 इतीश्रीपरमसीधांतपुणवकलपतरुगंधेनां
 मनांमीपतीपादकरंननामससमोकेतुसंम
 पुरगुः ॥ ॥ ७ ॥ अष्टादशतववावंन ॥ तीगंसच
 तुरषटमांहांय ॥ परमपुरसपडनालीका ॥ जी
 नमेपावतहांय ॥१॥ तेहीपरंमपडनालीका ॥ स
 संमवेदसेपाय ॥ तेहीससंमपदपरमसे ॥ केहे
 परमगुरुलाय ॥ २ ॥ परंमगुरुओरुपतीपद
 भीतभावकधुनांहांय ॥ एकमेकसमरसस
 दा ॥ परमगुरुपतीमांहांय ॥ ३ ॥ परमगुरुप

परम द्दपरमके ॥ लहतमरमगतीताय ॥ यातेपरम
 गुरुथकी ॥ परमपुरषदरसाय ॥ ४ ॥ परमपुरस
 जसगावंत ॥ बीनुपक्षकेलसनांम ॥ तेहीर
 सदेतपरमगुरु ॥ जांततजदीपमरांम ॥ ५ ॥ सो
 हीमरमभवगुसही ॥ जीनकीआद्यप्रनेता ॥ प
 रमपुनीतथकीपावत ॥ कोईकजवरलासंत
 द ॥ परमपुनीतसोपरमगुरु ॥ जंसहीपरम
 बीसेस ॥ तेहीजीनुलक्षलखावत ॥ करतनांम
 भीसेस ॥ ७ ॥ जेहीनांमनीजलक्षपर ॥ धसेह्वी
 धपतीपाद ॥ तेहीनांमनीजपतीतके ॥ ताईज
 पतगतीमाहाद ॥ ८ ॥ अखीलनांमसीरतारं
 न ॥ नीजपतीकेजेहीनांम ॥ नांमीनांमसदी
 दीत ॥ रहतअनाद्यसधांम ॥ ९ ॥ सोनीजधांम
 सधांमके ॥ अजन्यजीन्यकीरतार ॥ तीतके
 नांमआरोपीत ॥ मजतहोतभवपार ॥ १० ॥ बी
 नुनीजपतीनीजनांमही ॥ नांमकरतनही
 कांम ॥ परकुपारसकीये ॥ उपजतनहीक
 सुदांम ॥ ११ ॥ पारसनांमपारससीर ॥ उभये
 लोहपलटाय ॥ होतधातसुधकंचन ॥ मोही
 घेमुलवेकाय ॥ १२ ॥ आवतकाजजबीनांमही
 नीजनांमीपतीसंग ॥ पुनीनांमसीरओरु

के॥ भवदुखकरतनां भंग ॥ १३ ॥ भवदुखभंज
 नकरनकुं॥ नीजनां मीकेनां म॥ उभयेनां म
 नां मीवीना॥ नां मकरतनही कुं म॥ १४ ॥ रा
 जनां मसीर राजके॥ टेरतबोलही राज॥ री
 जेतोरी धसीध्यतए॥ करतकाजतेही राज॥
 १५ ॥ तेहीनां मसीर रंकके॥ बरजतबोलेसो
 य॥ रीकेपणतेही राजके॥ काजकरतनहीको
 य॥ १६ ॥ उत्तईतकेजेहीतेहीपरा॥ नां मसकल
 सीर व्याप॥ पणनां मीसां मरतलगी॥ करत
 काजतेही माप॥ १७ ॥ बडेबोलभीक्षुतसीर
 धरतनां मधंन्यपाल॥ पणकोडीखरचंन
 नही॥ क्पाहाभयेनां मवीसाला॥ १८ ॥ तबलेसां
 मथनां मीके॥ नां मजयेनीसतार॥ नां मीनां
 मसंजुक्तही॥ जबपावतदेदार॥ १९ ॥ सकलका
 जसंमपुरंण॥ नीजपतीदरसदेदार॥ जेहीनां
 मेनां मीमीले॥ तेहीनां मसतसार॥ २० ॥ सो
 हीसतसारसोदीतपदा॥ दरसवीनादीमहा
 ल॥ नां मीवीनाजेहीनां मकी॥ करतभक्तीस
 बगाल॥ २१ ॥ नां मीसजीवजडनां मही॥ समवी
 तसंघडोलंत॥ नां मीनां मदरसेजवी॥ टेरत
 तुरतबोलंत॥ २२ ॥ बीतनां मीजेहीनां मकु॥

परम

१२८

समरतहेसबकोय॥नामीदरसपरसवीना
काजतहोवतकोय॥२३॥नामीदरसतआ
गंम॥तनुधरकेलक्षरुप॥तबटेरततीनुतां
मकु॥बोलतहालअनुप॥२४॥अतीजडकाष्ट
पासांएही॥सुरसुवीनाथावरसुंत्य॥टेरतनां
मनांबोलही॥सदासुंत्यकेसुंत्य॥२५॥जबसे
नामीसजीवत्ये॥उचरेबोलतसोय॥जडके
सीरकेनांमही॥क्योंनहीबोलतकोय॥२६॥म
नुसदेववीनुओरनके॥नांमनांआवतकाज॥
आपत्येस्वारथकेलीये॥कीतनांमसबसाज
२७॥नांमसंगन्याअंककी॥उचरीलगायेआ
प॥पणतीतकेतनउपर॥नांमकीरेखतांछा
प॥२८॥छापहोयतोसबलीखे॥वंचीअंकमेल
या॥वीनुओलखीतजेहीनांमसे॥क्योंनहीले
तबोलाय॥२९॥जबसेनांमीनांमही॥नुगलमी
लेवीनुजंत॥भवसागरसागरमांही॥कोई
नहीउबरंत॥३०॥जबआयेनांमीमीये॥नां
मनआवतकांम॥नांमीसंघहलीमली॥सब
सुखहोतआगंम॥३१॥ओरनांमीजेहीनांमसे
समरततंनमंनदेह॥कारजतोजबहीसरे॥
नांमीमीलेसदेह॥३२॥तेहीनीजनांमीनांमही

अजरा अमर सजाप। केहं कुवेर खरवावहु।
 जेही पद आछ अद्याप। ३३। बीनुनी जनां मीनां
 मही। दरसावीना देवाल। कोटी करम करताम
 र। वरही त आल पं पाल। ३४। यावीधी रटण क
 र सुवे। नां मील हो बीनुनां म। प्रसीधो कारपो
 कारये। होत नमो स आरं म। ३५। यौं भर मत कु
 ही काल के। आप न्ये ख सं म वी सार। तीनु चेत
 न कर न न जेही। म मत नु ए ही उपगार। ३६।
 पर उपगारी जांती म म। अब जेही करो पती या
 र। तीनु नीज पती पर सावहु। केहं कुवेर पो क
 र। ३७। परम पो कार की ये हु म म। परम पुर श
 गती लाय। परम भाय गतीनु जान ही। परम मो
 स ते ही पाय। ३८। परम मो स पद पर म ही। म र
 म सुना वुहताय। अंत लोक उपजे खेपे। ओ
 शु अद्य कुन थाय। ३९। उपजे ओं म ना वत।
 सम ले श्रेष्ठ होय। आद्य अंत ओरु मध्य म ही
 ज्यौं को ल्यौं पद स्याय। ४०। अंत स दंत सब अंश
 के। कारं न करं न नी वास। जेही नीज प्रत्ये प सा
 रत। बो हो रुहं सकल वी लास। ४१। बुद्ध सना
 तं न के जे ही। परम प्रका सीत जां ए। अप रं म प
 र परम पर। छे वट पुर स पुरां ए। ४२। छे वट सी

॥ परम ॥ खरसकलसीरावलवीनुकेवलकाय कलीत
 सकलवलकेडीग ॥ वीतवुगकेतीतस्त्राय ॥ ४३ ॥
॥ १२८ ॥ सकलईष्टअधीपत्यपती ॥ जोगतिकोहुनांजोते
 ईश्वरजोत्यउपासीक ॥ ब्रह्मदरसलुंअयांन ॥ ४४ ॥
 सबकेमोहोघंसमालीक ॥ गुणघणकेत्युहंजो
 त्य ॥ जेत्येजीवईश्वरमही ॥ जीनकेअंशउद्यो
 त्य ॥ ४५ ॥ म्हांघंससोमदभूतंनता ॥ सबतेंप्र
 मअपेश्व ॥ ध्यानधरनओरुखवनकु ॥ सीर
 परसांमथसेख ॥ ४६ ॥ सकलआराधंतजेहु
 नके ॥ आपरहतनीरधार ॥ तायपरंतुहुकोई
 नही ॥ सीरपरसरजंतहार ॥ ४७ ॥ नीजनभसुं
 त्यसनातंत ॥ भरीतब्रह्मतदरूप ॥ एहीजीन
 केआभुक्षण ॥ जोटेजुगलअनुया ॥ ४८ ॥ खुदख
 गचेतंतब्रह्मही ॥ जेहीउभयेतंतुआल ॥ पणनी
 जपतीप्रसपुनहीत ॥ वीतसतनहीकोईकाल
 ४९ ॥ छेवटकेछेवटजेही ॥ सबधरताधरना
 र ॥ सबअंतनकेअंतही ॥ सबकरताकरनार
 ५० ॥ जीनकुकेवलकहतहें ॥ सांमथसाहेबना
 म ॥ केहंकुवेरसोहीसदयदा ॥ मेरेनीजवीस
 रंम ॥ ५१ ॥ खुदखावंनमेरेधनी ॥ येसेसांमथ
 सोया ॥ जबीहंसजीनुसुगतावुह ॥ सोक्योंसुग

तनहोय ॥ ५२ ॥ जुगजीवंनहेतकारणे ॥ उचरे
 हुजांनअनंत ॥ केहंकुवेरनरतीरभये ॥ सुण
 तांहोयसतंत ॥ ५३ ॥ अतीगत्यसरत्नसमक
 करी ॥ दरसायेहदीमनेन ॥ प्राद्यअंतउतई
 तमही ॥ कीत्येहृगतीपवेन ॥ ५४ ॥ संध्यागायं
 व्रीजप ॥ तीगंमअंकचुहंवांण ॥ तांमसहीत
 नरणेकीये ॥ प्रणववृक्षसफुरांण ॥ ५५ ॥ ओर
 चतुरगुरुगमंतकी ॥ वीसेसत्रीयेपरकारांची
 नभीनतीनकेकीये ॥ जीतुजेहीजंमअधीका
 रा ॥ ५६ ॥ अंसअंससीवरननधंत्याजंतमंतकरं
 नमेलाप ॥ सकलचोजनीजतरावी ॥ ओरु
 नीजपतीपदआप ॥ ५७ ॥ कलीमलहरंतकेतु
 सत ॥ कीयेहृगथठहंकार ॥ केहंकुवेरसमके
 नही ॥ तेजंतगतीगमारा ॥ ५८ ॥ परमसीधां
 तकलपतरु ॥ सकलगंथतंतुसीर ॥ सुणतां
 सेहेजसभावीक ॥ भवजलपावहीतीर ॥ ५९ ॥
 सप्तकेतुसतधातही ॥ मीलीअंगएकसोय ॥
 नीजपतीअंशसीखरसीर ॥ कताजीवंनजी
 तुजोय ॥ ६० ॥ सप्तकेतुसतदेहही ॥ मीलीतभ
 येपुरसाय ॥ अबकहुपंचीकराकी ॥ केहंकु
 वेरबताय ॥ ६१ ॥ तरकडसणपकरंनकर ॥ स

परम कल्पपंथकेत्याव। स्ववर्नादासुरुअंतस। रोम
 अंकतंतसाव॥६२॥ लक्ष्मिनेतसरवंतसुंत्य
 ॥१३०॥ अनुभवेजेहीअवीकास। गंमगुरुकरनतु
 चाजीतु। मोसवांणीसुखतास॥६३॥ सारअ
 सारसीधांतके। गंधग्रहंतजेहीवाक। असुभ
 उथापंतसुभथपे। सोहीसब्दीजनाक। ६४।
 गतीचकवेपसरंतपद। गुदाईडीमहीत्याग
 नांमरुपछोरुगुनयुह। अनीत्यसदाजेहीभा
 ग॥६५॥ रसीकवचनरसनाजीतु। मांनुभाव
 तासैस। अस्तकरुणसमकरुणसदा। रागवुरु
 दुआकेस॥६६॥ कोशपंचजीतुकहतुहं। सुने
 सजंतसंमदाय। अंतोमनोमयेवीज्ञानही
 आनंदप्राणसताय॥६७॥ सकल्पसलक्ष्म
 संत। अनमयेकोशअनीत्य। कल्पपीतकरंत
 समावंत। मनोमयेकोशजतीत्य॥६८॥ मोदीत
 तायआनंदमयेवीगत्यभागवीगत्यांतओ
 रकोसजेहीपंचमो। सरखपएसोहीप्रांत॥६९॥
 यावीधीपरमवीभागके। गंधपुरशअदभुत।
 वरनुहमातपीतातीनु। जीनेजायेएहीसुत
 ७०॥ सुरतवीचारउभयेजीतु। संजमकेसुत
 ओय। सुरतवीचारबालकपुती। नीजपतीअं

सकेदोय ॥ ११ ॥ सुस्तवीचारसहीतसुताकता
 अंशमीलीतास ॥ कुवेरमेहेलतंतुतस्वतमे
 नीसदीनकरतवीलास ॥ १२ ॥ नीजपतीअं
 शवालकजीनु ॥ अगतदोहभईबेहेन ॥ तीन
 केसंजमतेजेही ॥ भयेग्रंथसुतयेन ॥ १३ ॥ गं
 थपुरसपरीपुरण ॥ नीखसुहंसीखापजंत
 अनुपतत्वजुरीकेकीये ॥ मुरतीमांनएकतंत
 १४ ॥ तेहीतंततनुपुरसके ॥ एणवकलपतरु
 नांम ॥ भवजलभरममीटायके ॥ करनमोह्य
 वीसरंम ॥ १५ ॥ एणवग्रंथजेहीपुरसही ॥ पर
 ममोह्यजेहीदीन ॥ स्वनकरतभवभयेयुकी
 सोजंतसुवतनचीन ॥ १६ ॥ परममोह्यदाता
 जबी ॥ परमग्रंथपुरसाय ॥ भयेईतीसंसपुरण
 समस्तबोधगतीराय ॥ १७ ॥ सकलगंथनरजी
 नुपती ॥ जबीनरपतीगतीराय ॥ नीजअदका
 रीनकेघट ॥ जीनकेअमलपसाय ॥ १८ ॥ तेही
 रायरजतायके ॥ नीजलक्षखडकअनुप ॥ मा
 हामतमीगलसरकीये ॥ गंथज्ञानहीनभूप ॥ १९
 ॥ सायी ॥ परमसीधांतकलपतरु ॥ मांहीस
 सकेतुसार ॥ श्रीमतकुवेरनीजग्रंथकरता ॥
 पगटपोमीअवतार ॥ २० ॥ ईतीश्रीसंसपुरंनगं

परम ॥ थपुरसतदरूप ॥ श्रीमत्कूवेरसीरनायक
 उदीतभयेभवमुप ॥ ८ ॥ ग्रंथपुरसपंचीकरण
 ॥ १३१ ॥ कहोवीवीधीवीस्तार ॥ अबकहंकलंकीभुक्ष
 ण ॥ केहंकुवेरगतीसार ॥ ८ ॥ इतीश्रीपरम
 सीसांतपणवकलपतरुगंथेनामसप्तमोके
 लुसंपुर्ण ॥ ७ ॥ अथग्रंथपुरसपरीपुरणाताकेस
 रकलंकीभुक्षणधरखंतको ॥ अबतीनकेसीरधर
 नकु कहतकीलंकीतो ॥ ^{अग ८} रेण्यरताजीवजत
 मत ॥ उदेकरंनजीनुभोर ॥ १ ॥ रेण्यरतासोहीमत
 वश ॥ पतीवीनुपखअंधीयार ॥ तीनमेभटकत
 सबजुग ॥ जांहीजीनुमंतपतीयार ॥ २ ॥ नीजगं
 मनेंतबीनभवा ॥ धरसेपरमपराय ॥ अबतीत
 कुजेहीगुरुमीलेतेहीतेहीपुवापलाय ॥ ३ ॥ या
 तेसबजंनजुगमही ॥ जांहीतांहीपंथकसीन
 तांहीतीनुउपदेशेत ॥ होईरहोकरमकसीन ॥ ध
 तवतेहीकरमकसाईके ॥ कीलमीसमंजन
 झांन ॥ अबतेहीकहतसुतोमम ॥ भोरकरंन
 जेहीभांन ॥ ४ ॥ सकलपक्षवतरेण्यही ॥ उडघंत
 ईष्टजीनुरा ॥ षगटकरततीनुमांहीजेही ॥ आप
 तुआपपतीसुर ॥ ६ ॥ जेहीनीजपतीपदपरम
 ही ॥ सेवटसदंतसभापा ॥ तीनुअंशईतअंकुर

जेही आपनु नीज आप ॥१॥ आपनु आप जेही
 अंकुर ॥ नीज पद वी तुमेलान ॥ तब लगी ज
 गजगंन जप ॥ साधंन ससुरखेलान ॥ ८ ॥ जेही
 नीज पद कायंम कुल ॥ आपनु आप अंकुर ॥
 ताबी तुमो न्य पदारथ ॥ अवध्य काल अकृत
 र ॥ ९ ॥ पंचतत्व संनधंन मीली ॥ जेही दरसत
 भवखेत ॥ अवध्य काल तेही बीन सही ॥ पुर
 षप्रकृती समेत ॥ १० ॥ पण सबके अवीचल जे
 ही ॥ नीज पती अंकुर अंश ॥ बीन से नही को
 इकिल पही ॥ अजर अंम रगती हंस ॥ ११ ॥ ओ
 रुजेत न्ये जप जननके ॥ रसनाके उचराण ॥
 हेवी तुनीज अंकुर ॥ वथा करंन दंम हांण ॥ १२ ॥
 खेहे स्त्रनां मती गमादीक ॥ खटन वपुरांण अ
 वारा ॥ ओर ईश्वर अवतार मी ॥ रसना जप अ
 धीकार ॥ १३ ॥ एत न्ये भरस्वर हांतीत ॥ समर
 ण सीरगुण जाप ॥ आपनु आप नीज अंकुर
 लहे वी तु वथा वीलाप ॥ १४ ॥ तब ल्ये सकल उ
 चारंन ॥ रसना रटण जेही तांम ॥ अजया साधं
 न सीधन कु ॥ कछुन आवत कांम ॥ १५ ॥ अजप
 जप कल एही मुदा ॥ रहत अतीतंन तुर ॥ आप
 तु आपनी जपती पदा ॥ सोगंम गती बुडडुर ॥

॥ परम ॥

१३२१

१६॥ अती आरबल से एही जुग । सब मानत क
री देव । माहा मत सीध सरावंत । साधत एही अ
हं मेव ॥ १७॥ ओरु अज पा ज प सा धं ने । वचं न सी
धी सद होय ॥ ईश्वर संम करी मानत । आभव मे
सब कोय ॥ १८॥ ते ही ईश्वर जग मान तीये । हुब
मर ही अभी मान । आपतु आपती जपती प
दाते हु पणत दपी न जांत ॥ १९॥ गायं त्री संधा ज
पा फल प्रापती जीतु होय ॥ तो दर से त्री ये काल
की ॥ पणती ज आपन जोय ॥ २०॥ पुती जे ही जे
समाधी से । नीर खत नीर मल जोय । सुनत ये
स अ न ह्य धुनी । पणत ही आप उद्योय ॥ २१॥
आप जे ही नी ज जोय के । नीर खं न हार न चंत
सुन न हार ओरु नाद के । सीधते सो ही अचंत
२२॥ भक्ती चतुर खट करत ही । सही तल क्षणा
पेम ॥ रूप चतु भुज दर सीत ॥ धुं दे रवी त जी तु ने
म ॥ २३॥ जब ती न कु हरी मी खंत के । उप जत अ
ती अहं मेव । बहो जात भव सागर । बीन ची ते ह
नी ज भेव ॥ २४॥ चतु भुज जे ही दर सीत । अंत स
करण सफुरा का ए मथी त होय अगत्य ही । पण
न ही ती क सत सुर ॥ २५॥ सौ अंत स करुण का ए के
मथी दर सीत दल देव । आपतु आपती जपती प

दातेहीजांनतनहीभेवा॥२६॥ध्यांतीध्यांतध
 रतसबे॥चीतचीतवंतकेजोग॥होतलीनतु
 रीयेचीत॥रहतनजोगसमोग॥२७॥तेहीप
 णअलपगमेजवी॥ध्यांनसकलवीधीसोय॥
 आपनुआपसरमगसुजे॥तेहीजांनतनही
 कीय॥२८॥संत्यासीओरुजंगम॥सीवकेस
 मरणसार॥योक्षपदेपतीयारंन॥तहीनीज
 आपवीचार॥२९॥दाडुसमरतरांमकु॥सुंद
 रकेलक्षबुंद॥आपनुआपनीजपतीपदाअ
 लगरहेतहीअंम॥३०॥जीनसरायतजीवकु॥
 भजनकरनकुजोत्य॥आपनुआपनीजपतीप
 द॥तीनुहंनहोतसदीत्य॥३१॥सुसलमांनीसु
 सकलगत्या॥कहतरोमयेकींन॥रोजानीवाज
 गुजारत॥रहोदीनकेदीन॥३२॥अथरवेदअ
 नुकरमीत॥तेहीभरमीतभवमहांय॥अद्याही
 लाहीपोकारके॥नुरतज्यलांसांय॥३३॥नासु
 तमलकुतफभरुत॥लाहतजीतुअस्थानह
 रदंमहजरतरहीसदा॥करतउंनुअवीलांन
 ३४॥निकीबदीसुनावत॥साबुतकहतईमांन
 जीवतेजीवहलालकु॥करतनत्रासहेवांन
 ३५॥जबत्येमरमनजांनत॥सबरुहंसरजंत

परम सोय ॥ तबत्येमेहेसनलावत ॥ जीवतेजीवह
 नतोय ॥ ३६ ॥ जीनकुअघ्राकहतही ॥ नुरतंतुअ
 ॥ १३३ ॥ वार ॥ हीडकहतनीरंजंन ॥ दोहनकेएकसार
 ३७ ॥ एककहतहीजोत्यही ॥ एककहततीनुनु
 र ॥ आपनुआपनीजपतीपद ॥ सोलसलहतत
 भुर ॥ ३८ ॥ सरीयेतत्रीखतहकीगत्य ॥ चौथेमा
 रकतमांहांय ॥ प्रोक्षराहमांहीपचीरहो ॥ नीज
 रुहुबुरुतनांहांय ॥ ३९ ॥ नीजरुहुंकरिमाका
 दर ॥ बीनुहालफुरमांत ॥ काजीमुलांक्याकी
 ये ॥ पठीकतेवकुरांन ॥ ४० ॥ बीनुतेहेकीतअप
 नीरुहुं ॥ लहोबीनुदरवेश ॥ ओरुखावंनखो
 जानही ॥ क्याहाकीतधरीभेश ॥ ४१ ॥ सुसलमां
 नकेदीनकी ॥ नीतीनीपटजनीत ॥ दातनपाले
 गौहने ॥ देखोअकलअनीत ॥ ४२ ॥ याहावीध
 केडाहापंतमही ॥ नीजरगंमखोजनहोय ॥ आ
 पनुआपरुहुंकादर ॥ जबीजांततनहीकोय ॥ ४
 ३ ॥ ज्ञांनिकेलक्षतीरगुंन ॥ बृहसतंतरस्याव
 नांमरुपओरुगुंनपर ॥ अंतरधरतअभाव ॥ ४४
 नास्तीकुनीरसीतनही ॥ आस्तीकहतअपेप
 उभयेपदप्राप्तीबीनु ॥ भवभरमावीकभेख ॥ ४
 ५ ॥ नीरगुणनरणवितवसके ॥ सीरगुणकर

तसमेत येसेज्ञानवीटंडके।वेश्वभरनकेपेट
 ४६॥अहंब्रह्मसुखसेकेहे।पठपठसांखवेदां
 त॥नीजअनुभवनहीएहीमम॥तोकेोंपावही
 स्वांत॥४७॥एकाएकीभववीशे॥फरतमेखच
 कचुरा।दंमचंमदलमेनही॥तोकेोंभटकेसुर
 ४८॥मांनवडाईजककी॥लेनरहेनीरलेपाउ
 पलीचात्मदेशवावंत॥पणअंतरमहांलेप॥४९॥
 लेपनहीतोकेोंकरे॥उतईतदोरोदोरा॥सेवासं
 गत्यासंतकी॥नीजतंतकारंनफोरा॥५०॥आ
 चारजकेवचनसे॥कथतज्ञानकरीमोहोत॥
 बीनुअनुभवधरीकेफीरे॥अस्वामांनसीरयो
 त्वा॥५१॥आचारजव्यासादीक॥जीतकेवचन
 वेदांत॥तेहीम्यंमसेज्ञानीसवे॥सुनीसुनीही
 यसतंत॥५२॥तेहीसतंतरकेमते॥गनतन
 पापतपुंत्य॥अणसमकाउनमतफरे॥ज्यौंवा
 दीगत्यसुंत्य॥५३॥सुनवादीसरखासवे॥ज्ञानी
 भरसबकोय॥आपनुआपतीजपतीपद॥जी
 नुदरसातवहोय॥५४॥मध्यंमज्ञानीकीम्यंम
 जेहीजंमकहीसुनाय॥अबउतंमज्ञानीकुहं
 सुतोसंतगतीताय॥५५॥उत्यंमकेअवीलोकं
 त॥भागत्यागकरीनीन॥सांख्यजोगजुगतेजी

॥ परम

॥ १३४

वृत्तवन्तकुतंतचीत॥५६॥क्षीतीजलपाव
कपवन्तही॥सुनसहीतततसंच॥एहीतंतके
वईभागही॥पोखतपंचेपंच॥५७॥अवनीमेल
इअवत्यमे॥तोयमेल्लावततोय॥पवनेपवन्तन
भेनभातिजेतेजसमोय॥५८॥पंचेपंचमेल्लाय
के॥यावीधसेतंतनओय॥चैतंतसेचैतंतमीली
अहंबुल्लकेहेसोय॥५९॥सुंवापीछेकुंतअवतरे
कोहेकुंतनभुगतेक्रम॥वहीतवीटंडीथईफरे
यावीध्यकेलहीअंम॥६०॥पणचैतंतनहीआ
पंतपु॥नीजपतीबुल्लनसोय॥जवतीनकेए
कतायसे॥अंससुगत्यनवहोय॥६१॥तत्वमीत्ये
जोतत्वसे॥योचैतंतओरुबुल्ल॥एदोहकेसाक्षीय
नके॥तेहेजांततहीअंम॥६२॥जेहीसाक्षीनीज
आपनपु॥नीजपतीअंसअलेख॥चैतंतओरु
चीदबुल्लके॥जांतनहारसलेख॥६३॥तेहीजांत
नजांनेवीना॥जांतीसकलउमंग॥ज्योपतीबी
लुकुवासका॥मोदधरतकरीस्वांग॥६४॥एक
हीबुल्लसतंतरामुखसेकहतजनाय॥सुनका
दीकसुखतरीगये॥तोकोजकरहाय॥६५॥एक
होयतोसवतरे॥संतसहीतसंसार॥ओत्यवी
नाकुंतउगरे॥सुगतवतरकमोकार॥६६॥ओर

संत अगती तद्यत्ने ॥ भये मुक्त होय सीवा ॥ एक
हुता तो कौं रह ॥ आं स्य सकल सब जीव ॥ ह्य
राम क्रम व्यासा दीक ॥ कपी लदेव दतरूप ॥
अष्टवंक संकर धरा ॥ भये ईष्ट भव सुप ॥ ह्य जीव
दपुरां न प्रसीध पदा ॥ जांत त सब मही माय ॥ ए
कहुते कौं तां भये ॥ सकल जीव संमताय ॥ ह्य
मछ कछ वैराह व्याग्रही ॥ पसु जो त्प अवतार
एकहुते कौं तां भये ॥ ओर पशु संमतार ॥ ७० ॥
कोई कुसंत जब कहत ही ॥ अखी लबुं त्य संसा
रा ॥ नीगं म आं मना क्पां हां रही ॥ तब सीख दे
वंत सार ॥ ७१ ॥ एकतां हां को हो के हंत कु ॥ सम
जै ओरु सम जाय ॥ सकल जांत गं म साहा
स्तार ॥ की त्ये ह क वं न उपाय ॥ ७२ ॥ को अज्ञां
नी ते ह न कु ॥ लक्ष्य लखा वं न ज्ञान ॥ कह न हा
र ज्ञां नी को हो ॥ एक मां ही अखी ल्यां न ॥ ७३ ॥ पु
नी एक मां ही भी न भी न ॥ सुख दुःख कुं त सु
गतंत ॥ च हो जीव संम ईश्वर ॥ जो होय एक ही
तंत ॥ ७४ ॥ सब के तंत एक सारी खे ॥ जीव ओरु
ईश्य प्रजंत ॥ जीव गत्य कछु न जांत त ॥ ईश्वर
गती सतंत ॥ ७५ ॥ एक होय तो सबंत की ॥ गती
सतंत र होय ॥ जीव ईश्वर लह सर भर ॥ मधी

॥ परम

॥ १३५

कलुंन्यतहीकोय ॥ ७६ ॥ एक होय तो एही वीधे च
हो सतंतर सोय ॥ या तो सब भीत भीत लगे ल
धी कलुंन्य जग जोय ॥ ७७ ॥ तब त्ये सब ज्ञानी गुं
नी ॥ परम हंस लहताय ॥ एक ब्रह्म जेही कहत
हे ॥ को हो अनुभवती तु न्याय ॥ ७८ ॥ अनुभव क
रे तो ब्रह्म लौं ॥ एक ता करी देखाय ॥ पण जीव
ईश्वर भी नता ॥ नावी क भर मन जाय ॥ ७९ ॥
एसे ही ब्रह्म सीधांत मे ॥ जेही ज्ञानी उमंगाय
आपनु आपनी जपती पदा ॥ जवी जांत तत ही
ताय ॥ ८० ॥ कोई रसना उलटी करी ॥ तालुक
अगल गाय ॥ उन सुनी धरी धी रवे वत ॥ आसं
न अंत जमाय ॥ ८१ ॥ कंठे दुग दुगी लग रहे ॥ उ
तईत कथुन भांन ॥ धारा अंम त गंग की ॥ नाय
करत जेही पांन ॥ ८२ ॥ सुंन्य सी खर सर भर
तणी ॥ अंम त सागर ले हे स ॥ सर स ल्या र स
ना पर ॥ करत अ हो नी स से स ॥ ८३ ॥ ते ही क
रण ही लग आवत ॥ रसना तालुक तंत ॥ सुर स
ली ता अंम त तणी ॥ अर स थ की अ च वंत ॥ ८४ ॥
पुम प सी न यु ल की त तंत ॥ रो म रो म रं कार
ग द ग द कंठे ग ली त चीत ॥ रे हे र सब स एक ता
र ॥ ८५ ॥ ओ रु चै तं न सु ध सा ग रो व ती सर ल स

लुसुत ॥ रहत सदा एकता मयी ॥ माहादमते
 मदसुत ॥ ८६ ॥ एही वीध के साधन धन ॥ तन
 मंन करी खुरवांन ॥ प्रोक्ष परं मपद पावंन ॥
 अरपी रहो उनी जयान ॥ ८७ ॥ ओरुं मरतपी
 वंन फल ॥ जेही पाप सपुनी थाय ॥ ब्रीतुं नन
 लके तेही दीन ॥ अंमर रहत तीतुकाय ॥ ८८ ॥
 तन राखंन फल प्रेक्षकी कही साधन वीधी सो
 य ॥ आपतु आपनी जयती पदा ॥ तेही जानत त
 ही कोय ॥ ८९ ॥ सुंन्य सीखर घर की गंम ॥ जो ज
 नही कोई संत ॥ सुने त्याद अत हद्य धुनी ॥ ती
 र खत जोत्य प्रजंत ॥ ९० ॥ जेही आगे हंम कही
 गये ॥ जोत्य नाद ऊंन कार ॥ एही नीर खंन पद
 प्रोक्षके ॥ लहेनां नीर खंन हार ॥ ९१ ॥ सुंन्य सी
 खर घर की परे ॥ माहा सुंन्य सीखर रूप ॥ अ
 मीत सीखर तीतकी परे ॥ जुगमे कोई के ज
 तुप ॥ ९२ ॥ परम प्रकार सीखर पुनी ॥ अमीत
 सीखर सीरतंत ॥ धंभीरा सीखरे सबे ॥ सब
 सीखरंत के अंत ॥ ९३ ॥ धंभीरा जेही सीखर ही
 घुडगत घेहेर धंभीरा ॥ सब सीखर न सीर आवी
 गत्य ॥ आघ अंत बीतुतीरा ॥ ९४ ॥ सुंन्य माहा सुं
 न्यही अमीत पुनी ॥ परम सीखर सीरताय गं

परम ॥ भीरासीखरकोडीसकलमेहीजबीजाय ॥
 तीनुगतीघेहेरघंभीरही ॥ अकीतसदागलत
 ॥ १३६ ॥ रहतरचीतउनमुनीवत ॥ घंभीरिसीघरं
 त ॥ ६६ ॥ पंचसीखरसफुरतजीनु ॥ ओरुपुनी
 तीनकेवेत ॥ भीनभीनजांतजेही ॥ घंभीरसी
 खरसमेत ॥ ६७ ॥ पंचसीखरघरकीगंम ॥ अत
 भवकरंनवीचार ॥ जेहीदृष्टाएहीसबनकेते
 हीनलहतततसार ॥ ६८ ॥ जेहीदृष्टानीजआ
 पनपु ॥ तेहीनलहो जबीभेव ॥ तोतीनकुती
 जपतीपद ॥ क्योपावतअहंसेव ॥ ६९ ॥ तेहीघंभी
 रासीखरमे ॥ गतीघंभीरजमाय ॥ नीजतारीक
 संतरजपे ॥ जेहीतंनमंतजंनलाय ॥ १०० ॥ तेहन
 जांततआपनपु ॥ जेहीनीजजपजपतार ॥ नी
 जतारकसंतरंनके ॥ जीनुप्रोक्षयतीयार ॥ १०
 १ ॥ नीजकेहेतांजेहीआपनपु ॥ तीनकेतारंन
 सोय ॥ नीजतारकसंतरतेही ॥ सुनीसंतसब
 कोय ॥ १०२ ॥ तबतेहीतारकसंत्रही ॥ जेहीनीज
 करीजपतार ॥ नीजतोआपनुआपनपु ॥ मंत्र
 प्रोक्षप्रनुसार ॥ १०३ ॥ जेहीजीनुईष्टउपासन
 तेहीमापसजपकीत ॥ भीनभीनबुद्धभववीष
 आगतीतसंत्रसजीत ॥ १०४ ॥ तेसेहीनीजता

सकजप ॥ ओर मंत्र प्रथकी म्होठ ॥ पणनी जप
 ती ओरु प्राप नपु ॥ ताबीच करन कु ओर
 १०५ ॥ धंभी राजेही सी खरके ॥ ओरु नी जता
 सकजाप ॥ एही उभये परकाशीक ॥ तिही नी
 जप्राप नु प्राप ॥ १०६ ॥ मंत्र सजीव जप नार
 से ॥ जपतां होय जबाप ॥ नही तो जडना जड
 सदा ॥ जेते भरकु लजाप ॥ १०७ ॥ अष्टादश
 खटन वल्युहं ॥ कागदली खे कुरांत ॥ धरीर्ये
 बोले नही ॥ प्रापे नी गमपुरांत ॥ १०८ ॥ वंचे ज
 बी वंचावही ॥ मंत्र सहीत सबवां एय ॥ तबते
 वचं नहारही ॥ सकल जाप जुगजां एय ॥ १०९ ॥
 ती गंम प्राद्य भव भजंतके ॥ मंत्र सहीत कर
 नार ॥ ओरु सहीत नी जता सक ॥ जेही जाप ज
 पनार ॥ ११० ॥ तेही जाप जपनारकी ॥ खोज
 बीना सबरवोत ॥ भव जल अंत न प्रावही ॥ ज
 पत जाप कही कोत ॥ १११ ॥ एही वीधी मंत्र स
 कल जेही ॥ नी जता सक जप प्राद्य ॥ पद पावंत
 जुगधर जंत ॥ जपत जाप पर स्वाध ॥ ११२ ॥ जब
 तेही पर स्वाधी तजंत ॥ जपत जाप होई दीन ॥
 प्राप नु प्राप नी जपती पद ॥ तबसे तेहं नंची
 न ॥ ११३ ॥ कोई पकडत न्हे असरा ॥ सार शब्द पु

ती सोई कोई कहत घर रे हेत ही ॥ नीज गुण गुण
 मयद सोई ॥ ११४ ॥ सार सब सो ही सब हे
 सकल शब्द सी रदार ॥ न्हे ॥ अस र पण अस र
 सकल अंक की रतार ॥ ११५ ॥ कहत रे हेत घ
 र ते ही घर ॥ सब घर के सी र मो होत ॥ आप्त
 आप पती पद बीतु ॥ ए सब खाली चो होत ॥
 ११६ ॥ जित न्ये भर जप कारंन ॥ ध्यान धरत दर
 साय ॥ आप्तु आपती जपती पद ॥ तीन मेत
 हीन कहाय ॥ ११७ ॥ पंचतत्व ओरु गुंन घंण
 माया जोत्यने बंध ॥ येतने मेत ही आप्तपु
 त ही नीज पती पद परी ॥ ११८ ॥ नीर गुण सी
 र गुण आप्तमा ॥ परमांतं मलह सोय ॥ आप
 तु आपती जपती पद ॥ जीन मेत ही की लुके
 य ॥ ११९ ॥ दशं ई ई अंत स क्रण ॥ पंचकोश चुहं
 वां एप ॥ यमेत ही नीज आप्तपु ॥ पुती नीज प
 ती नीर वां एप ॥ १२० ॥ अज पाज पजे ही प्रणव ही
 रंकार ओंकार ॥ सो सदन ही नीज आप्तपु न
 ही नीज पती नीर धार ॥ १२१ ॥ जाग्रत सुप्रस सो
 पती ॥ ओरु तुरीया उंन संन्य ॥ इन मेत ही नीज
 आप्तपु ॥ न ही नीज पती पद पुंन्य ॥ १२२ ॥ ज्ञा
 न भक्ती वैराग ही ॥ पुन ही जोग अष्टांग ॥ येतने

मेनही ज्ञापनपु ॥ पुनी नही नीजपती अंग ॥ १२३ ॥
 शुद्ध सुखमकारणमाहा ॥ परमकारणस
 हदेहा जीनमेनही नीजज्ञापनपु ॥ ओरुनही
 नीजपदछेहा ॥ १२४ ॥ नामरूपजीनकेगुंन ॥ बु
 तीसहीतवीस्तार ॥ तीनमेनहिनीजज्ञापन
 पु ॥ नहीनीजपतीसुभसार ॥ १२५ ॥ माहातत
 पुनी अहंकारही ॥ हरअसरसुहसाज ॥ इति
 मेनहीनीजज्ञापनपु ॥ नहिनीजपतीमाहा
 राज ॥ १२६ ॥ सुंन्यसीखरओरुमाहासुंन्य ॥ अमी
 तसीखरअनुसुत ॥ सोहीपणनहीनीजज्ञा
 पनपु ॥ नहीनीजपतीअदसुत ॥ १२७ ॥ परमपु
 काससीषरजेही ॥ कहतपरमलक्षसोयआ
 पनुआपनीजपतीपदा ॥ इतिमेनहीकीनुको
 य ॥ १२८ ॥ ओरुगंभीरासीखरही ॥ जिहीछेवट
 सुंन्यमाहादा ॥ तेहीपणनहीनीजज्ञापनपु
 नहीनीजपतीपतीपादा ॥ १२९ ॥ तंमपदतद
 पदअसीपदा ॥ सदचीदआनंदव्याप ॥ तेही
 पणनहीनीजज्ञापनपु ॥ नहीनीजपतीपद
 थाप ॥ १३० ॥ अयंमअहोतीरमलनीज ॥ अ
 हंबंअसीकीन ॥ सोलक्षनहीनीजज्ञापन
 पु ॥ नहीनीजपतीपरवीन ॥ १३१ ॥ बावंनअं

परम ॥ कसहीतजेही ॥ मंत्रजंत्रबुहमीन ॥ जीनमेनही
 नीजआपनपु ॥ ओरुनीजपतीपदचीन ॥ १३२ ॥
 ॥ १३५ ॥ नीजतारकेहे ॥ अस्य ॥ सारसबधररेहेत ॥ इ
 नमेनहीनीजआपनपु ॥ पुनीनीजपतीसमेत ॥
 १३३ ॥ अनहघनादगगंतधुंती ॥ बुंसरुंडजंतका
 र ॥ सोसतनहीनीजआपनपु ॥ नहीनीजपती
 पदसार ॥ १३४ ॥ परमहंसजेतनेभर ॥ असमी
 कीयेपोकार ॥ सोअसमीनहीआपनपु ॥ ओ
 रुनहीनीजकीरतार ॥ १३५ ॥ जितयेभरहंस
 कहीगये ॥ आपनुआपपतीनांहांय ॥ धृष्टि
 हीतेहीसबनके ॥ सोआपनपुसबमांहांय ॥ १
 ३६ ॥ एहीआपनपुचरअचरके ॥ उतईतकेधृ
 ष्टाय ॥ तिहीसबधृष्टंनकेदीग ॥ सोनीजपतीग
 तीराय ॥ ३७ ॥ जेहीआपनपुओरुपतीपद ॥ संझ
 देहीदरसाय ॥ यावीधकेडुरलभलसकोहोकी
 नसेसुनीपाय ॥ १३८ ॥ येसेहीजोगतीअदभुत
 जुगधरजांततनांहांय ॥ आद्यअंतओरुमध
 मही ॥ आपनुआपजेहीसांय ॥ १३९ ॥ सोआप
 नपुओरुपतीपद ॥ नीजग्यंमअतीअजमालर
 येहसृष्टजीनुअबलगी ॥ कोहनकीयेसंभाल ॥ १
 ४० ॥ जवीहंसआयेहतनुधर ॥ कहनकाजरबुद

खोज ॥ पठवायेहुनी जपती जबी ॥ आपत्येही
 शपरोज ॥ १४१ ॥ जबीहंम कहत पोकारही ॥ नी
 जपती परमसहेत ॥ ममसमधी सबअंशकु
 जांतीतसकलसखेत ॥ १४२ ॥ अंससखेतज
 दीपमम ॥ नीजपतीसरजसंमंध तदीपकहत
 आतीआघुही ॥ सकलमेठावंनध्वंध ॥ १४३ ॥ ध्वं
 धमेठावंनअंशके ॥ अहंगलीतअवतार ॥ नीज
 पतीपुजापरंमवीत ॥ तायकरंनभवपार ॥ १
 ४४ ॥ जेहीनीजपतीपरजाईत ॥ सकलचराच
 रअंश ॥ जांतीसहीदरपतीपरवे ॥ ममउरकहं
 नआकंश ॥ १४५ ॥ अहंगसहीतसबअंसके
 एकहीसरजंनहार ॥ जबहीसकलममबंधव
 जांहांसुहुपतीविस्तार ॥ १४६ ॥ अहंगअंशमम
 सबंनये ॥ नीजपतीकीयेहुवीशेश ॥ सरजेस
 कलसांमांन्यही ॥ पुनहीअंशभवभेश ॥ १४७
 तेहीभवअंशसांमांन्यकु ॥ व्यापतअतीअग
 नांन ॥ आपसहीतपतीपदसुहं ॥ रहतनही
 जीनुज्ञान ॥ १४८ ॥ तेहीगुंमज्ञानकरनजेही
 सदगुरुकेअवतार ॥ लितावत्यपरजदीपसे
 जुगनजुगनबुहवार ॥ १४९ ॥ जेहीसतगुरु
 अवतारही ॥ लितावत्यपरजदीपसे

॥ परम ॥ सुसीधांतमौलस्यलखावनहार ॥ १५० ॥ पणनी
 जपतीः प्रोरुआपनपु ॥ तीनेमेकहननकोय
 ॥ १३५ ॥ प्रथमः प्रायश्चकीजेहीग्यंम ॥ अबहंमलायेह
 सोय ॥ १५१ ॥ तवजेतयेततवेतही ॥ जुगधरजां
 ननहार ॥ सकलज्ञानप्रोरुममग्यंम ॥ करही
 नीरुपतसार ॥ १५२ ॥ जौनीजदांमसकलसी
 र ॥ अधीपत्यपारसदांम ॥ पणचंत्यामणीआ
 गल ॥ कछुनः प्रावतकांम ॥ १५३ ॥ त्योकुलज्ञान
 सकलसीर ॥ बलज्ञानप्रतीमोहोटा ॥ पणके
 वलचंत्यामणे ॥ कोहनतीनकीः प्रोता ॥ १५४ ॥ या
 वीधसेतरणेनीज ॥ करदेखहीजंतकोय ॥ ती
 ररवपरेलस्यसबंतके ॥ प्रोरुममग्यंमजेहीहो
 य ॥ १५५ ॥ सारः प्रसारः जुवेजवी ॥ तवहंमसेय
 तीः प्राय ॥ बीनपतीयारंनपतीपदा ॥ किसेकरी
 वकसाय ॥ १५६ ॥ तवजेतयेजंतजक्रकोजी
 तुमीलनपतीभाव ॥ आपसहीतदरसाचहो
 तेहीचरननममः प्राव ॥ १५७ ॥ तोबीछडेकही
 कलंपकेजीनसेकरुमेलाप ॥ अबहंमसेनी
 रसुखजेही ॥ पीछेकरहीपस्ताप ॥ १५८ ॥ जबये
 सेजांतीजंत ॥ अबसेमीलोसबेव ॥ तीजपती
 पदः प्रोरुआपनपु ॥ सेहेजलखावहमेव ॥ १५९ ॥

उदेअस्तस्योरुउतइति॥याग्यंमजुगधरमोहो
 या॥केहंकुवेरहंमवीनजेही॥कहंनहारकोई
 नाहांय॥१६०॥दीरघदृष्टीकरदेखही॥जेहीअ
 नुभविततवेत॥केहंकुवेरतबदरसही॥ममग्यं
 मपरंमसहेत॥१६१॥परंमपुरसपठवायेहु॥ज
 दपीपरमगतीलाय॥तदपीकहतसबजाहांन
 कु॥दीमअनुभवगतीताय॥१६२॥जेहीजेही
 जनपतीयावही॥हंमसेतीरत्यलाय॥तेहीते
 हीजनतीरनेकरु॥नीजपतीपदपरसाय॥१
 ६३॥कहंनहुतीसोसबकही॥खलकसबोजल
 सभेद॥आपनुआपपतीपदवीनु॥ओरसब
 कीयेउछेद॥१६४॥पणतंदेनहीमतकरी॥सब
 लक्ष्मीयेवीलोक॥सुदावीनाथापंनकरी॥कौ
 भरमाबुहलोक॥१६५॥आपनुआपवीनुपती
 पद॥थपेपेथजेहीपीव॥नीजमतलवकारंन
 सबे॥गयेमुलावहीजीव॥१६६॥जेहीमतलव
 सबपक्षतकी॥धुरतगयेधुडाय॥जीनमेखो
 जनपतीपद॥नंदतदोसनताय॥१६७॥दोष
 हंमनकुकेपौलगे॥करतपरमपतीथाय॥ओ
 रूलखावतघटमही॥जेहीआपनुनीजआप
 १६८॥आपलखाबुहसबघट॥जेहीआवही

ममनेर। पुनीकरतादरसावह। सोमथकेहे
 कुवेर। १६९। जगजीवंतहेतकारंने। उचरे
 ज्ञानअंतत। केहंकुवेरनरनीरभये। सुनतं
 होयसतंत। १७०। परमसीधांतकलपतरु।
 सप्तकेतुजीनुमांहांय। कीयेकलंकीभुसरा
 जीनकेसीरधरनांहांय। १७१। अरुढबोधन
 तीअनुभव। सकलज्ञानसमसेर। नीजपती
 पदपरसावत। पारुहपरंमकुवेर। १७२। सुने
 कलंकीभुसरा। जेहीजंतंतनमंनलाय। खु
 लेनेननीजलक्षके। दरसेपरमपराय। १७३।
 परंमपरायपरमपद। प्राद्यजंतमध्यसोय
 दरसीअंशसहीतजीमे। होयरहीसरलस
 सोय। १७४। परमकल्पतरुगंथसे। परम
 मोक्षफलपाय। जोजंतहोयसीरशरवत। ई
 षतसोहीपदपाय। १७५। परमकल्पतरुगं
 थही। परमज्ञानगतीराज। परमबोधनीज
 पतीपद लायेहुनीजमाहाराज। १७६। परम
 गुरुपदज्ञानकी। खोजकरीचकवेव। सार
 असारनवेरंत। सकलसुनायेहुंनेव। १७७।
 परमकल्पतरुगंथमे। परमखोजखुदमाहा
 दा। परमदक्षदीक्षापद। कीयेश्रीकुवेरपतीप

॥१७८॥ श्रीरत्ना ॥ श्रीरत्नसंज्ञनहार ॥ श्री
 मत्कुवेरपतीसंमथ ॥ प्रसन्नहोतभवपार
 सरत्नग्रहेजंनतेहंनके ॥१७९॥ उदीतभये
 भवसुन ॥ सकलगंथश्रीरत्नायक ॥ समस्त
 बोधपरीपुर ॥ इतीग्रंथसंमपुरंन ॥१८०॥ र
 चुसुखदतीजधाम ॥ नगरसारसासुभरुण
 नक ॥ करेचीत्तचरनविराम ॥ संतभोगीभ
 जतानंद ॥१८१॥ दोहा ॥ परमस्त्रीधांतकल
 पतरु ॥ मांहीससकेतुसार ॥ श्रीमत्कुवेर
 नीजगंथकर्ता ॥ प्रगटयोमीप्रवतार ॥१८
 २॥ परमस्त्रीधांतकलपतरु ॥ उदीतप्रकेव
 तक्रांत्य ॥ श्रीमत्कुवेरदयाकर ॥ कीयेस
 जनमंनस्वांत्य ॥१८३॥ कीयेसजंनस्वांतमं
 न ॥ क्रांतकेवलदरसाई ॥ भीनभीनपरिवो
 ध ॥ अलखलखदीयोखषाई ॥१८४॥ दी
 योखखाईलक्षपक्षपातीसबहुटी ॥ गंथनी
 धीजलमांहांय ॥ भरिमंनमांण्यकमुती ॥१
 ८५॥ इतीश्रीपरमस्त्रीधांतप्रणवकलपत
 रुगंथसंपुणसमाप्तः ॥